।। श्री हरि शरणम्।।

रायसेन से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

अमृत दर्शन

RNI No. MPHIN/2012/43555

वर्ष - 13 अंक - 65

रायसेन
सोमवार, 01 सितंबर 2025

● पृष्ठ : 8 ● मूल्य : 1 रुपया

Website : www.amritdarshan.com

रायसेन, नर्मदापुरम एवं भोपाल से प्रकाशित

खास बात

सिद्धान्त की बातें तो पुस्तकों से छाँटकर सभी वाद-विवाद में पटु हो जाते हैं; मगर कितने उन सिद्धान्तों पर चलते हैं।

- अज्ञेय

संक्षिप्त समाचार

सिंधिया परिवार की तीसरी पीढ़ी को मिली एमपीसीए की कमान, महाआर्यमन अध्यक्ष बने

इंदौर। मध्यप्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन (एमपीसीए) की कमान अब सिंधिया परिवार की तीसरी पीढ़ी के हाथों में आ गई है।

शनिवार को नामांकन की अंतिम तिथि तक, महाआर्यमन सिंधिया के अलावा किसी और ने अध्यक्ष पद के लिए पर्चा नहीं भरा, जिससे उनका निर्विरोध अध्यक्ष बनना तय हो गया है। इस तरह, उन्होंने अपने दादा माधवराव सिंधिया और पिता ज्योतिरादित्य सिंधिया की विरासत को आगे बढ़ाया है और वह एमपीसीए के इतिहास में सबसे युवा अध्यक्ष भी बन गए हैं। सिंधिया परिवार और मध्यप्रदेश क्रिकेट का रिश्ता दशकों पुराना है। माधवराव सिंधिया और उसके बाद ज्योतिरादित्य सिंधिया ने इस एसोसिएशन का नेतृत्व किया। महाआर्यमन, जिनका जन्म 17 नवंबर 1995 को हुआ था, ने अपनी शिक्षा दून इंटरनेशनल स्कूल और लंदन की येल यूनिवर्सिटी से पूरी की। वे वर्तमान में ग्वालियर क्रिकेट एसोसिएशन के उपाध्यक्ष हैं और उन्होंने ही प्रदेश में एमपीएल की शुरुआत की थी। उनका यह कदम राजनीतिक गलियारों में उनके संभावित प्रवेश का संकेत भी माना जा रहा है। हालांकि, संयुक्त सचिव पद पर मुकाबला रोचक होने की उम्मीद है। इस पद के लिए सिंधिया गुट से अरुंधती किरकिरे और स्वतंत्र उम्मीदवार अमरदीप पठानिया के बीच सीधी टक्कर होगी।

पीसीसी चीफ की कार का कांच फोड़ा, पटवारी ने माफी मांगी

रतलाम। रतलाम में मध्यप्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी के काफिले को धाकड़ समाज ने घेर लिया। उन्हें काले झंडे दिखाए। उनकी कार के शीशे मुक्के मारकर तोड़ दिए। इस घटना को लेकर जीतू पटवारी ने कहा कि भाजपा नेताओं ने उन पर हमला किया। वहीं कांग्रेस ने स्टेशन रोड थाने में नामजद शिकायत की। जिस पर पुलिस ने अज्ञात के लिए एफआईआर दर्ज की है। दरअसल, पटवारी ने एक सभा में मंच से भाजपा से जुड़े मंदसौर के धाकड़ समाज के दो नेताओं को लेकर बयान दिया था। जिसके विरोध में नाराज समाज के लोगों ने प्रदर्शन किया। जीतू पटवारी ने काफिला रोककर समाजजनों से उस बयान पर माफी मांगी। हालांकि उन्होंने ये भी कहा कि उन्होंने उन दो नेताओं के बारे में कहा, जिन्होंने शर्मसार करने वाला काम किया है। जीतू पटवारी ने समाज के लोगों को अपना रिश्तेदार बताया। वह रविवार को रतलाम में 'वोट चोर, गद्दी छोड़' जनसमर्थन यात्रा में पहुंचे थे

अंतर्मना उवाच

पर्वों के पर्वराज का चोथा चरण - उत्तम शौच

उत्तम शौच का अर्थ है- जिसे चाहो - उससे कुछ मत चाहो..!

83 लाख 99 हजार 9 सौ 99 योनियों में सिर्फ एक मानव है जो धन कमाता है। अन्य कोई भी जीव बिना धन कमाये आज तक ना भूखा सोया ना भूखा मरा। सिर्फ एक मानव है जो पैदा होने के बाद से आज तक ना पेट भर पाया, ना पेटी। *इस लोभ वृत्ति से मुक्त होने के लिये संतोष का मार्ग है- उत्तम शौच।*

संतोषी दरिद्र होने के बाद भी सुखी है और लोभी समृद्ध होने के बाद भी दुखी परेशान है। *हमें दु:ख में से सुख खोजकर जीना है। दु:ख में सुख खोज लेना भी एक कला है।* ***बड़े से बड़े दुखों में भी छोटे छोटे सुख के चिराग छुपे होते हैं।*** *उन्हीं सुखों को पकड़कर यदि मनुष्य जिंदगी जीता है, तो जिन्दगी भर सुख, शांति, आनंद, प्रेम का अमृत बरसता है।*

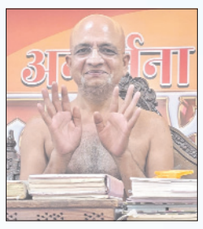

मैं धन का विरोधी नहीं हूँ- धन होना चाहिए लेकिन ***सिर्फ धन के लिए जीवन नहीं गवाना चाहिए।*** *जिंदगी में धन कुछ हो सकता है लेकिन धन सब कुछ नहीं हो सकता। जैसे जैसे धन बढ़ता है वैसे वैसे भोग विलासिता के संसाधन हमारे अमन चैन के जीवन को उजाड़ कर, ना सिर्फ वीरान बना देते हैं, अपितु दर्द भरा जीवन जीने के लिए विवश भी कर देते हैं। उत्तम शौच के अभाव में आदमी की अच्छी खासी जिन्दगी भोग विलास, ऐशो आराम से केवल पतोन्मुखी बनती है। इसलिए जीवन को उन्नत समुन्नत बनाने के लिये सिर्फ धन नहीं, साथ में धर्म की भी आवश्यकता है।* ***सौ बात की एक बात - कितना भी धन कमा लो और धन जोड़ लो- साथ कुछ भी नहीं जायेगा।***

जो अनंत सुख तक साथ दे उसका दामन थामना ही उत्तम शौच धर्म है...!!!

■ अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज

पीएम मोदी और उनकी मां के अपमान पर फूटा गुस्सा, सागर में कांग्रेस के खिलाफ भाजपा का बड़ा प्रदर्शन

सागर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनकी दिवंगत माता जी पर कांग्रेस नेताओं द्वारा की गई अपमानजनक टिप्पणी के खिलाफ रविवार को भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा द्वारा तीन बत्ती स्थित कॉग्रेस कार्यालय के सामने मौन धरना देकर विरोध प्रदर्शन कर रोष व्यक्त किया।

मातृशक्ति का अपमान कर कांग्रेस समाज व संस्कृति के विपरीत कार्य कर रही है

भोपाल। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि बिहार की एक सभा के दौरान राहुल गांधी और तेजस्वी यादव के मंच से प्रधानमंत्री की माता जी को लेकर अपमानजनक टिप्पणी की गई। इस टिप्पणी से भारतीय जनता पार्टी के एक-एक कार्यकर्ता के साथ देश के बुद्धिजीवी एवं संभ्रांतजन भी आक्रोशित हैं। देश और दुनियाभर में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की बढ़ती लोकप्रियता से बौखलाए कांग्रेस नेता अपमानजनक टिप्पणी कर रहे हैं।

सीएम ने 21 फीट ऊँची अटल प्रतिमा का किया अनावरण

ग्वालियर ■ एजेंसी

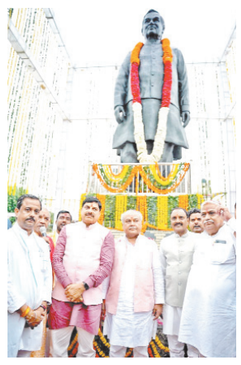

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारत रत्न स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी की 21 फीट ऊँची भव्य प्रतिमा का अनावरण सौभाग्य का क्षण है। अटल स्मृति संघ, अंबाह की पुण्य भूमि पर आज एक स्वर्णिम अध्याय की शुरुआत हुई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को मुरैना जिले के अंबाह में 31 लाख रुपये की लागत से निर्मित प्रतिमा के अनावरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अटल जी की यह प्रतिमा जयश्वर महादेव पार्क में स्थापित की गई है, जहाँ 25 लाख की लागत से जिम और 40 लाख की लागत से लाइटिंग एवं प्लेटफॉर्म का निर्माण कराया गया है। यह प्रतिमा लगभग 200 करोड़ मूल्य की शासकीय भूमि पर स्थापित की गई है। उन्होंने कहा कि अटल जी के नेतृत्व में गांव-गांव तक सड़कों का जाल बिछाया गया। वर्ष 1956 से 2003 तक प्रदेश में केवल 5 मेडिकल कॉलेज थे, जबकि पिछले डेढ़ वर्षों में प्रदेश में 5 नए मेडिकल कॉलेज खोले गए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में सांदीपनि विद्यालयों की स्थापना विकासखंड स्तर पर की जा रही है। इसके अतिरिक्त आईटीआई संस्थान भी खोले जा रहे हैं, जिससे छात्र-छात्राएं पढ़-लिखकर अपने ही जिले में रोजगार प्राप्त कर सकें। इसी क्रम में 500 करोड़ की लागत से ग्राम पिपरसेवा में उद्योग स्थापना हेतु भूमिपूजन किया गया है।

विश्वास और सम्मान से सुधरेंगे रिश्ते... बॉर्डर मैनेजमेंट पर बनी सहमति

आतंकवाद से लड़ने मोदी ने चीन का साथ मांगा, जिनपिंग को भारत आने दिया न्यौता

नई दिल्ली/तिआनजिन ■ एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को चीन के तिआनजिन में राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात की। यह मुलाकात शंघाई सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन से पहले हुई, जो करीब 40 मिनट तक चली। बैठक में दोनों नेताओं ने सीमा पर शांति, आपसी सहयोग और द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर जोर दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रपति जिनपिंग का गर्मजोशी भरे स्वागत के लिए आभार जताया और कहा कि पिछले साल कजान में हुई मुलाकात ने रिश्तों को सकारात्मक दिशा दी। उन्होंने कहा कि सीमा पर डिसइंगेजमेंट के बाद शांति और स्थिरता का माहौल बना है।

मोदी ने बताया कि विशेष प्रतिनिधियों के बीच बॉर्डर मैनेजमेंट पर सहमति बनी है। कैलाश मानसरोवर यात्रा और दोनों देशों के बीच सीधी उड़ानें फिर से शुरू हो गई हैं। उन्होंने कहा कि भारत और चीन के सहयोग से 2.8 अरब लोग जुड़े हुए हैं और इससे पूरी मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा।

प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि भारत परस्पर विश्वास, सम्मान और संवेदनशीलता के आधार पर रिश्तों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। साथ ही उन्होंने सहयोग संगठन शिखर की सफल अध्यक्षता के लिए राष्ट्रपति जिनपिंग को बधाई भी दी। इस बैठक में पीएम मोदी के साथ एनएसए अजीत डोभाल, विदेश सचिव विक्रम मिसरी, चीन में भारतीय राजदूत प्रदीप रावत और जॉइंट सेक्रेटरी (ईस्ट एशिया) गौरांग लाल दास मौजूद रहे।

जिनपिंग ने कहा- ड्रैगन और हाथी का साथ आना ज़रूरी- राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने पीएम मोदी से मुलाकात पर खुशी जताई। उन्होंने कहा कि कजान में हुई पिछली बैठक सफल रही और भारत-चीन का साथ आना बेहद ज़रूरी है। जिनपिंग ने कहा, दुनिया बड़े परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। भारत और चीन दो सबसे सभ्य व आबादी वाले देश हैं और ग्लोबल साउथ का अहम हिस्सा हैं। दोस्त बनना, अच्छे पड़ोसी बनना और ड्रैगन व हाथी का साथ आना बहुत महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि इस साल भारत-चीन राजनयिक संबंधों की 75वीं वर्षगांठ है। दोनों देशों को रणनीतिक और दीर्घकालिक दृष्टिकोण से संबंधों को आगे बढ़ाना चाहिए। जिनपिंग ने बहुपक्षवाद, बहुध्रुवीय विश्व और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में लोकतंत्र बनाए रखने की ज़िम्मेदारी पर भी जोर दिया और कहा कि एशिया व दुनिया की शांति और समृद्धि के लिए भारत और चीन को मिलकर काम करना होगा।

भारत-चीन रिश्ते विश्वास और सम्मान पर आगे बढ़ेंगे : पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ द्विपक्षीय वार्ता के दौरान आपसी विश्वास, सम्मान और संवेदनशीलता के आधार पर भारत-चीन संबंधों को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। उन्होंने सीमा चौकियों से सैनिकों की वापसी के बाद संबंधों और शांति के विभिन्न मोर्चों पर हुई प्रगति की सराहना की। उन्होंने कैलाश मानसरोवर यात्रा की शुरुआत और दोनों देशों के बीच सीधी उड़ान संपर्क की शुरुआत का भी ज़िक्र किया। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच सीमा प्रबंधन पर सहमति बन गई है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, पिछले साल कजान में हमारी बहुत ही उपयोगी चर्चा हुई थी जिससे हमारे संबंधों को सकारात्मक दिशा मिली। सीमा पर सैनिकों की वापसी के बाद शांति और स्थिरता का माहौल बना है।

पुतिन, जिनपिंग, मोदी और शरीफ एक फ्रेम में आए नजर

चीन में शंघाई सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन के दौरान एक आकर्षक नजारा देखने को मिला। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और अन्य नेता एक मंच पर नजर आए। तियानजिन में आधिकारिक स्वागत समारोह के दौरान ये नेता एक फोटो फ्रेम में खड़े नजर आए। अब यह तस्वीर दुनिया भर में तेजी से वायरल हो रही है और राजनीतिक विश्लेषक इसे मायने तलाशने में जुट गए हैं। कहा जा रहा है कि इस एक तस्वीर ने अमेरिका समेत दूसरे शक्तिशाली देशों को मजबूत संदेश देने का काम किया है।

मुख्यमंत्री करेंगे विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का अनावरण एवं ऐप का लोकार्पण

भोपाल ■ प्रतिनिधि

भारतीय काल गणना पद्धति और वैज्ञानिक परम्परा को एक नई पहचान मिलने वाली है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सोमवार को सुबह 11 बजे मुख्यमंत्री निवास में विक्रमादित्य वैदिक घड़ी और इसके मोबाइल एप का लोकार्पण करेंगे। यह घड़ी भारतीय पंचांग और कालगणना को आधुनिक तकनीक से जोड़ती है। इसे 189 से अधिक भाषाओं में देखा जा सकेगा। इस अद्वितीय घड़ी के माध्यम से समय के साथ-साथ पंचांग, तिथि, नक्षत्र, योग, वार, मास, व्रत और त्यौहारों की जानकारी भी उपलब्ध होगी।

मुख्यमंत्री के संस्कृति सलाहकार श्रीराम तिवारी ने बताया कि एक सितम्बर को सुबह 9 बजे शौर्य स्मारक पर कॉलेज, विश्वविद्यालयों के युवा एवं विद्यार्थी एकत्रित होंगे। शौर्य स्मारक से बाइक/बस रैली भारत का समय - पृथ्वी का समय आरंभ होगी, जो श्यामला हिल्स थाने तक जायेगी। श्यामला हिल्स थाने में बाइक पार्क कर रैली पैदल मार्च में बदलकर मुख्यमंत्री निवास के मुख्य द्वार तक पहुँचेगी। इस मौके पर विक्रमादित्य वैदिक घड़ी- भारत के समय की पुनर्स्थापना की पहल विषय युवा संवाद कार्यक्रम भी होगा, जिसमें मुख्यमंत्री डॉ. यादव युवाओं से सीधा संवाद करेंगे।

विक्रमादित्य वैदिक घड़ी के बारे में विशेष जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय काल गणना पर आधारित यह विश्व की पहली घड़ी है। भारतीय काल गणना सर्वाधिक विश्वसनीय पद्धति का पुनर्स्थापन विक्रमादित्य वैदिक घड़ी के रूप में उज्जैन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 29 फरवरी 2024 को किया गया था, जिसे देश और दुनिया में अच्छा प्रतिसाद मिला। विक्रमादित्य वैदिक घड़ी भारतीय परंपरा, वैदिक गणना और वैज्ञानिक दृष्टि का अद्भुत संगम है। भारतवर्ष वह पावन भूमि है जिसने संपूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने ज्ञान से आलोकित किया है।

औद्योगिक और ऊर्जा क्रांति का आधार बनेगी नई हाइड्रोजन निर्माण इकाई : मुख्यमंत्री

मुरैना ■ एजेंसी

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मुरैना के पिपरसेवा में हो रहा हाईड्रोजन निर्माण इकाई का भूमिपूजन नई औद्योगिक क्रांति, नई ऊर्जा क्रांति और नए मध्यप्रदेश की नींव है। मुरैना की ऐतिहासिक धरती पर स्थापित हो रही यह इकाई ग्वालियर-चंबल क्षेत्र की नई विकास यात्रा का प्रतीक बनेगी। चंबल की भूमि उपजाऊ और कमाऊ होने के साथ ही टिकाऊ भी है। मुरैना जो कभी बीहड़ों के कारण जाना जाता था, आज विकास और प्रगति की नई पहचान बना रहा है। मुरैना अब सिर्फ कृषि प्रधान जिला नहीं रहा बल्कि औद्योगिक हब के रूप में भी उभर रहा है। मुरैना की गजक ग्लोबली ट्रेंड हो रही है। देश की संसद के पुराने भवन का डिजाइन भी मुरैना के मितावली मंदिर से लिया गया था।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को मुरैना जिले के पिपरसेवा में जीएचटू सोलर लिमिटेड की हाईड्रोजन निर्माण इकाई के भूमि-पूजन अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया और उद्योगपतियों से संवाद कर आशय-पत्र भी वितरित किए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी किसानों, गरीबों और लघु उद्यमियों के लिए स्वदेशी की लड़ाई लड़ रहे हैं। राज्य सरकार और प्रदेशवासी पूरी प्रतिबद्धता से उनके साथ हैं। मुरैना में आरंभ हो रही हाईड्रोजन इकाई में कोरिया और ब्रिटेन की अग्रणी कम्पनियां तकनीकी सहयोग कर रही हैं। निकट भविष्य में इससे ग्रीन हाईड्रोजन का उत्पादन किया जाएगा। परियोजना से लगभग 500 युवाओं को प्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा।

गाड़ी 'सड़क पर नहीं तो टैक्स नहीं' सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। मोटर व्हीकल टैक्स को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने एक बड़ा और स्पष्ट फैसला सुनाया है, जिससे लाखों वाहन मालिकों को राहत मिल सकती है। सर्वोच्च न्यायालय ने अपने आदेश में कहा है कि अगर कोई व्यक्ति अपने वाहन का इस्तेमाल सड़क, हाईवे या किसी अन्य सार्वजनिक स्थान पर नहीं कर रहा है, तो वह मोटर व्हीकल टैक्स देने के लिए बाध्य नहीं है। जस्टिस मनोज मिश्रा और जस्टिस उज्ज्वल भुइयां की बेंच ने यह फैसला राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड से जुड़े एक मामले पर सुनाया है। RINL ने आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट के दिसंबर 2024 के एक फैसले के खिलाफ दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए यह व्यवस्था दी।

माता वैष्णो देवी में भूस्खलन का बढ़ा खतरा

प्रशासन ने होटल और धर्मशालाओं को खाली करने का दिया आदेश

कटरा ■ एजेंसी

जम्मू-कश्मीर के कटरा में पिछले दिनों हुए भूस्खलन के बाद प्रशासन ने होटल और धर्मशालाओं को खाली करने का आदेश जारी किया है। प्रशासन ने कटरा में भूस्खलन के खतरे के चलते व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को खाली करने का आदेश दिया है।

केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के उपमंडल मजिस्ट्रेट कटरा कार्यालय ने रविवार को यह आदेश जारी किया। इसमें कहा गया कि कटरा उपमंडल में हाल के दिनों में भारी बारिश और खराब मौसम के कारण बालिनी ब्रिज और शनि मंदिर के पास कदमाल में बड़े पैमाने पर भूस्खलन हुआ है। साथ ही कुछ स्थानों पर सड़कें भी धंस गई हैं। इससे क्षेत्र में भविष्य में भूस्खलन और नुकसान का खतरा बढ़ गया है। कटरा उपमंडल मजिस्ट्रेट पीयूष धोत्रा ने श्री माता वैष्णो देवी यात्रा के लिए कटरा आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए तत्काल प्रभाव से बालिनी ब्रिज से दर्शनी ड्योढ़ी और बालिनी ब्रिज से एशिया चौक तक के क्षेत्र में स्थित सभी व्यावसायिक प्रतिष्ठानों (जैसे होटल, धर्मशालाओं आदि) को खाली करने का आदेश जारी किया है। यह आदेश भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163 के तहत जारी किया गया है।

अग्रवाल समाज की भावना के अनुरूप प्रदेश के शहरों में बनाए जायेंगे बहुउद्देश्यीय गीता भवन

देश के स्वाभिमान के लिए योगदान देने में अग्रवाल समाज अग्रणी : मुख्यमंत्री

भोपाल ■ प्रतिनिधि

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि देश के स्वाभिमान के लिये योगदान देने में अग्रवाल समाज सदैव अग्रणी रहा है। अपने बनने का भाव, संघर्षों के बीच जगह बनाने का भाव एवं देश सेवा का भाव अग्रवाल समाज में गहरे तक समाहित है। अग्रवाल समाज की इसी भावना के अनुरूप सरकार प्रदेश के शहरों में बहुउद्देश्यीय गीता भवनों की स्थापना करायेगी। इन भवनों में कम्प्यूटर शिक्षा और जनकल्याण के कार्य सहित अन्य सामाजिक गतिविधियां आयोजित की जा सकेंगी। गीता भवनों के निर्माण में सहयोग के लिये अग्रवाल समाज आगे आए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को ग्वालियर में अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन की मध्यप्रदेश इकाई द्वारा दि ग्रेट महाराज अग्रसेन नाटक मंचन के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर के अटल सभागार में आयोजित कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर, ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, सांसद भारत सिंह कुशवाह, अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रदीप मित्तल, राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष रमेश गर्ग एवं संगठन के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राकेश अग्रवाल सहित अन्य पदाधिकारी एवं भाजपा जिला अध्यक्ष जयप्रकाश राजौरिया मंचासीन थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अग्रसेन महाराज का जीवन सदैव प्रेरणादायी रहा है। अग्रसेन महाराज ने समाज को बताया कि सफल व सार्थक जीवन जीने की दृष्टि क्या हो।

उद्योगों के लिये देश की सबसे अच्छी संभावनाओं वाला राज्य है मध्यप्रदेश

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देश में उद्योगों के लिये मध्यप्रदेश सबसे अच्छी संभावनाओं वाला राज्य है। मध्यप्रदेश में सभी प्रकार के रोजगार और उद्योगों की स्थापना के लिये सरकार हर तरह की मदद उपलब्ध करा रही है। उन्होंने कहा सरकार उद्योगों में श्रमिकों के रखने के लिये अनुदान के साथ बिजली, जमीन सहित अन्य प्रकार के अधोसंरचनागत कार्यों के लिये भरपूर अनुदान दे रही है। साथ ही अस्पतालों और शिक्षण संस्थानों की स्थापना के लिये भी सरकार द्वारा अनुदान दिया जाता है।

पीएम मोदी के 'मन की बात'

आपदाओं में जिसने प्रियजन खोए उनकी पीड़ा, हम सबका दर्द

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के जरिए रविवार को लोगों से बात की। इस दौरान उन्होंने प्राकृतिक आपदाओं का जिक्र किया। उन्होंने बारिश, बाढ़ और भूस्खलन से काफी तबाही हुई है। हर पीड़ित का दर्द, हम सभी का दर्द है। हर कोई पीड़ितों की मदद के लिए हरसंभव मदद कर रहा है। उन्होंने कहा कि मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार! मानसून के इस मौसम में प्राकृतिक आपदाएं देश की कसौटी कर रही हैं।

फिल्म यूनिट जगह-जगह फेंक रही कचरा, शिकायत के बावजूद रोक नहीं

बमुलिया गांव में टीवी शो शूटिंग से नाराजगी

सीहोर। सीहोर के ग्राम बमुलिया में छोरिया चली गांव नामक टीवी शो की शूटिंग से ग्रामीणों में नाराजगी बढ़ रही है। फिल्म यूनिट द्वारा गांव में जगह-जगह कचरा फेंका जा रहा है। यह कचरा सार्वजनिक स्थानों और रपटे के नजदीक फैला हुआ है। शूटिंग के शुरुआती दिनों में ग्रामीण खुश थे। उन्हें लगा कि गांव को पहचान मिलेगी और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। लेकिन फिल्म यूनिट की लापरवाही ने उनकी खुशी को ठेस पहुंचाई है। कचरे से फैली बदबू ग्रामीणों और राहगीरों के लिए परेशानी का कारण बन गई है। ग्रामीणों ने फिल्म यूनिट से कई बार शिकायत की। लेकिन न तो साफ-सफाई कराई गई और न ही कचरा फेंकने पर रोक लगी। जिले में स्वच्छ भारत अभियान चल रहा है और स्वच्छता रैंकिंग में सुधार के प्रयास किए जा रहे हैं।

भाजपा जिला कार्यकारिणी घोषित करने का सिलसिला शुरू, हरदा- सागर से शुरुआत

भोपाल ■ निसं

भारतीय जनता पार्टी ने लंबे इंतजार के बाद जिलों में कार्यकारिणी गठन की प्रक्रिया तेज कर दी है। हरदा जिले से इसकी शुरुआत करते हुए 17 पदाधिकारियों की नई टीम घोषित की गई है। जल्द ही अन्य जिलों और प्रदेश स्तर पर भी कार्यकारिणी और राजनीतिक नियुक्तियों की घोषणा की जाएगी।

भारतीय जनता पार्टी ने लंबे इंतजार के बाद जिलों में कार्यकारिणी गठन की प्रक्रिया को तेज कर दी। पार्टी ने इसकी शुरुआत हरदा, सागर ग्रामीण जिले से कर दी है, जहां रविवार को 17 पदाधिकारियों की घोषणा की गई। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल की सहमति से बनी इस नई कार्यकारिणी को संगठनात्मक गतिविधियों में नई ऊर्जा के रूप में देखा जा रहा है। हरदा जिला अध्यक्ष राजेश सिंह वर्मा ने कार्यकारिणी की सूची जारी की। इसमें 5 उपाध्यक्ष, 3 महामंत्री, 8 मंत्री और 1 कोषाध्यक्ष बनाए गए हैं। उपाध्यक्ष- जगदीश सोलंकी, प्रभुलाल पटेल, गयाशंकर पांडे, सुधीर सोनी, बिनोद गोते। महामंत्री- बसंत सिंह राजपूत, राजेंद्र गोदारा, मनोज निषाद। मंत्री - विजय पटेल, अखिलेश बांके, निखा दुबे, रुक्मणी गौर, ज्योति गहलोत, बिंदु गुर्जर, सपना अग्रवाल, पूजा शर्मा। कोषाध्यक्ष-समर्थ सिंहल। जिला अध्यक्ष वर्मा ने कहा कि नई टीम भाजपा की विचारधारा और योजनाओं को जनता तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य करेगी।

उपाध्यक्ष- अनिल बिनोले, लक्ष्मण सिंह लोधी, उषा उर्मिल श्रीवास्तव, दौलत यादव, शैलेंद्र सिंह ठाकुर, विवेक मिश्रा, अभिजीत सिंह राजपूत, कमलेश्वरी गोविंद कुर्मी। महामंत्री- जितेन्द्र चौहान, उमा कृष्ण खटीक, राजेश तिवारी। मंत्री-अमित नायक, सविता संतोष रोहित (अहरिवार), आकांक्षा अभय जैन, महेन्द्र सिंह लोधी, पूनम वैभव कुचरेले, महेश पाठक, राजेन्द्र मिश्रा, प्रीति सिंह राजपूत। कोषाध्यक्ष-सचिन दुबे। कार्यालय मंत्री- संजय चौबे। सह कार्यालय मंत्री- राजाराम कुशवाहा को बनाया गया है।

सागर ग्रामीण में 22 पदाधिकारियों की कार्यकारणी

भाजपा ने सागर में पहली बार दो जिला अध्यक्षों की घोषणा की है। इसमें ग्रामीण जिला अध्यक्ष रानी कुशवाह ने प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल की सहमति से 22 सदस्यों की कार्यकारिणी घोषित की है। इसमें 8 उपाध्यक्ष, 3 महामंत्री, 8 मंत्री, एक-एक कोषाध्यक्ष, कार्यलय मंत्री और सह कार्यालय मंत्री बनाए हैं।

संक्षिप्त समाचार

निगम कर्मचारी राजपूत के स्वास्थ्य की जानकारी लेने घर पहुंचे महापौर

उज्जैन, निप्र। महापौर मुकेश टटवाल द्वारा शनिवार को नगर निगम में माल विभाग प्रभारी अधिकारी श्री जयसिंह राजपूत के निवास पहुंचकर स्वास्थ्य की जानकारी ली गई। माल विभाग में कार्यरत श्री जयसिंह राजपूत जी का विगत कई दिनों से स्वास्थ्य खराब था साथ ही बीमारी के चलते ऑपरेशन भी करवाया गया स्वास्थ्य खराब होने की सूचना मिलने पर महापौर की मुकेश टटवाल द्वारा श्री राजपूत जी के निवास पहुंचकर उनका हालचाल जाना।

रैली व पुतला दहन आज

खरगोन। कांग्रेस के मंच से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की स्व. माताजी के लिए अभद्र भाषा का प्रयोग किए जाने के विरोधस्वरूप 1 सितम्बर, सोमवार को दोपहर 12 बजे खरगोन जिला मुख्यालय पर जिला स्तरीय रैली व पुतला दहन किया जाएगा। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी प्रकाश भावसार ने बताया 1 सितंबर को दोपहर 1 बजे जिलाध्यक्ष नंदा ब्राह्मणे के नेतृत्व में जिला कार्यालय से राधावल्लभ मार्केट स्थित परशुराम चौराहा (फव्वारा चौक) तक रैली निकालकर कांग्रेस का पुतला दहन किया जाएगा। श्रीमती ब्राह्मणे ने समस्त कार्यकर्ता व पदाधिकारियों से विरोध रैली व पुतला दहन कार्यक्रम को सफल बनाने का आह्वान किया है।

अधिवक्ता संघ माखननगर ने जिला एवं सत्र न्यायाधीश का किया स्वागत

माखननगर। तहसील अधिवक्ता संघ माखननगर ने शुक्रवार को जिला मुख्यालय में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्रीमती तृप्ति शर्मा का पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया । स्वागत करने वालों में अधिवक्ता संघ अध्यक्ष हरगोविंद चौहान, सचिव राजेन्द्र मेहरा ,सह सचिव जीवनलाल साहू ,कार्यकारिणी सदस्य मनीष मालवीय, मनोज परसाई व वरिष्ठ अधिवक्ता दीप सिंह यादव सहित अन्य अधिवक्ता सामिल रहे ।

कलेक्टर गुप्ता ने शतरंज प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया

खंडवा। जिला शतरंज संघ, खंडवा द्वारा 15 हजार रुपए की ईनामी राशि की शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन कोठारी ट्यूटोरियल, जयनगर, खंडवा में किया गया। इस प्रतियोगिता में कुल 68 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया । सीनियर वर्ग में 5 राउंड के पश्चात 5 अंक लेकर वैभव तोमर प्रथम, डॉ. वेद प्रकाश मलानी द्वितीय एवं सुनील जैन तृतीय रहे । अंडर 9, अंडर 11 और अंडर 14 में प्रथम रहे खिलाड़ियों को भी ट्राफी प्रदान की गई। इस पुरस्कार वितरण समारोह को संबोधित करते हुए कलेक्टर ऋषव गुप्ता ने बच्चों को सभी प्रतियोगिताओ में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने इस अवसर पर शतरंज की जीवन में उपयोगिता को विस्तार से समझाते हुए टिप्स देते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। समापन समारोह का संचालन अजीत जैन द्वारा किया गया। इस अवसर पर संघ के राजेश बछानिया, रविंद्र थत्ते, मनीष अग्रवाल, वेद प्रकाश मलानी के साथ ही सुनील जैन,अजय दवे, अनुराग वाजपेई, राजकुमार गुप्ता, पंकज मूंदड़ा, सत्यनारायण राठौड़ , डॉ. सिद्धार्थ श्रीमाली, डॉ. अत्रिवाल, जितेंद्र पटेल, पार्थ, मानस, शिखर , मनीष के साथ बड़ी संख्या में बच्चों के पालकगण भी मौजूद थे ।

भाजपा सेवा पखवाड़ा के रूप में मनाएगी पीएम मोदी का जन्मदिवस

गांव-नगरों में 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक होगा सेवा व सामाजिक कार्यों का क्रियान्वयन

जिलाध्यक्ष नंदा ब्राह्मणे ने जिलास्तरीय टोली का गठन कर सेवा पखवाड़ा को सफल बनाने का आह्वान किया

खरगोन ■ निसं

भारतीय जनता पार्टी द्वारा देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिवस सेवा पखवाड़ा के रूप में मनाया जाएगा। पीएम मोदी के जन्मदिवस 17 सितंबर से गांधी जयंती 2 अक्टूबर जिलेभर में विभिन्न सामाजिक एवं सेवा कार्यों के माध्यम से मोदीजी के दीर्घायु एवं स्वस्थ रहने की कामना की जाएगी। इसके लिए भाजपा जिलाध्यक्ष श्रीमती नंदा ब्राह्मणे ने जिला स्तरीय टोली गठित की है। उन्होंने कार्यकर्ता व पदाधिकारियों से सेवा पखवाड़ा को सफल बनाने का आह्वान किया है।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी प्रकाश भावसार ने बताया प्रदेश भाजपा अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल के निर्देश पर जिलाध्यक्ष श्रीमती नंदा ब्राह्मणे ने सेवा पखवाड़ा के सफल क्रियान्वयन के लिए गठित जिला स्तरीय टोली में संयोजक हरीश शर्मा जिला उपाध्यक्ष, सहसंयोजक नरेंद्र अतिशय जोशी एवं भोलू कर्मा नपा उपाध्यक्ष खरगोन को मनोनीत किया है। श्रीमती ब्राह्मणे ने कहा मोदीजी के नेतृत्व में सेवा परमो धर्म: को चरितार्थ करते हुए समाज के गरीब, शोषित एवं वंचित वर्गों के उत्थान के लिए अनेक ऐतिहासिक कार्य हो रहे हैं। उनका व्यक्ति एवं कृतित्व अद्वितीय है। प्रत्येक वर्ष विभिन्न प्रकार के सेवा एवं सामाजिक कार्यक्रमों के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी के जन्मदिवस 17 सितंबर से 2 अक्टूबर गांधी जयंती तक सेवा पखवाड़ा के रूप में मनाते हैं एवं उनकी दीर्घायु व स्वस्थ रहने की कामना करते हुए प्रधानमंत्रीजी के व्यक्तित्व से प्रेरणा लेते हैं। मोदीजी ने भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर राष्ट्र सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने, भारत को आत्मनिर्भर बनाने, तकनीकी और नवाचार के वैश्विक नेतृत्व हासिल करने, समाज के सभी वर्गों तक सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने एवं वोकल फॉर लोकल के मंत्र के साथ विकसित भारत के संकल्प को 2047 तक साकार करने का आह्वान किया है।

देशभर में सेवा पखवाड़ा गतिविधियां

सेवा पखवाड़ा अंतर्गत पीएम मोदी के जन्मदिवस 17 सितंबर से लेकर गांधी जयंती 2 अक्टूबर तक देशभर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करणीय है। इनमें प्रमुख रूप से स्वच्छता अभियान, एक पेड़ मां के नाम वृक्षारोपण, रक्तदान शिविर, स्वास्थ्य शिविर, प्रधानमंत्री के जीवन पर डाक्यूमेंट्री फिल्म प्रदर्शन, प्रबुद्ध वर्ग संवाद, दिव्यांग और राज्य के अन्य विशिष्ट व्यक्तियों का सम्मान, वोकल फॉर लोकल का प्रचार, प्रधानमंत्री पर चयनित पुस्तकों का वितरण, सांसद खेलकूद प्रतियोगिता, विकसित भारत चित्रकला प्रतियोगिता, मोदी विकास मैराथन, पीएम मोदी के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी, पंडित दीनदयाल जयंती 25 सितंबर एवं गांधी जयंती 2 अक्टूबर के उपलक्ष्य में कार्यक्रम होंगे।

देशवासियों को प्रधानमंत्री मोदीजी के नेतृत्व पर गर्व है।

देपालपुर में मनाया गया विमुक्ति दिवस

इंदौर, निप्र। रविवार को देपालपुर तहसील के मांचल गाँव में स्थित आश्रम शाला परिसर में विमुक्ति दिवस उत्सव अत्यंत उत्साह और गरिमा के साथ मनाया गया। यह दिन विमुक्त, घुमंतू एवं अर्ध-घुमंतू समुदायों के लिए एक ऐतिहासिक महत्व रखता है, क्योंकि इसी दिन 1952 में अंग्रेजों द्वारा बनाए गए आपराधिक जनजाति अधिनियम को समाप्त किया गया था, जिसने इन समुदायों को कलंकित किया था। यह कार्यक्रम विमुक्त, घुमंतू एवं अर्ध-घुमंतू कल्याण विभाग द्वारा आयोजित किया गया था। इसकी अध्यक्षता जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रीना सतीश मालवीय ने की। इस अवसर पर स्वामी दादू महाराज, श्रवण चावड़ा, करण नायक, शंकर एच चौहान, प्रकाश मानावत जैसे गणमान्य व्यक्तियों सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी और स्थानीय लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत विमुक्त कन्या छात्रावास सांवेर और बालक आश्रम शाला के बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए देशभक्तिपूर्ण नृत्यों से हुई, जिन्होंने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। अतिथियों ने एक माँ के नाम से पौधारोपण कर प्रकृति और मातृशक्ति के प्रति सम्मान व्यक्त किया।

वाहन रजिस्ट्रेशन के डेटाबेस में मोबाइल अपडेशन का अभियान

वाहन मलिक सारथी पोर्टल पर जाकर खुद कर सकते हैं अपडेट

खंडवा, निप्र। परिवहन विभाग द्वारा मोबाइल नम्बर अपडेट करने के लिये इन दिनों विशेष अभियान प्रारंभ किया गया है। इस अभियान के तहत वाहन स्वामी अथवा डीलर नेशनल इन्फार्मेशन सेंटर एनआईसी के वाहन सारथी पोर्टल के माध्यम से स्वयं ही आसानी से अपना मोबाइल नम्बर अपडेट कर सकते हैं। प्रदेश में वाहन के पंजीयन और ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करते वक्त आवेदक को अपना मोबाइल नम्बर दर्ज करना अनिवार्य होता है। कई बार वाहन स्वामी की जगह डीलर अपना मोबाइल नम्बर दर्ज करा देते हैं। वाहन स्वामी और डीलर द्वारा सही मोबाइल नम्बर दर्ज कराने के बाद संबंधित व्यक्ति द्वारा मोबाइल नम्बर कुछ वर्षों बाद परिवर्तित कर देने के कारण डेटाबेस में संबंधित व्यक्ति का मोबाइल नंबर अपडेट नहीं रह पाता है। परिवहन विभाग ने जानकारी दी है कि वाहन सारथी पोर्टल पर आधार प्रमाणीकरण के माध्यम से मोबाइल नम्बर अपडेट करने की ऑनलाइन सुविधा उपलब्ध है। आधार में दर्ज आवेदक और उसके अभिभावक के नाम का वाहन पंजीयन और ड्रायविंग लायसेंस के डेटाबेस में दर्ज नाम से शत-प्रतिशत मिलान होने पर डेटाबेस में मोबाइल नम्बर तत्काल अपडेट हो जाता है। आधार पंजीयन और ड्राइविंग लायसेंस के डेटाबेस में दर्ज नाम में भिन्नता पाई जाती है, तो आवेदक को पोर्टल पर अपना कोई दूसरा परिचय पत्र जैसे आधार कार्ड, मतदाता परिचय पत्र और पासपोर्ट अपलोड करना पड़ता है। आरटीओ कार्यालय द्वारा दर्ज दस्तावेज और आधार से आवेदक और उसके अभिभावक के नाम का पंजीयन और ड्राइविंग लायसेंस में दर्ज नाम का सत्यापन किया जाता है। अप्रूवल के बाद मोबाइल नंबर डेटाबेस में अपडेट हो जाता है।

अपडेड प्रक्रिया को विस्तृत रूप से स्क्रीन शॉट के माध्यम से समझाने के लिए मध्यप्रदेश परिवहन विभाग के पोर्टल के होमपेज पर लिंक उपलब्ध कराई गई है। वर्तमान में वाहन रजिस्ट्रेशन एवं ड्राइविंग लायसेंस संबंधी समस्त सेवाओं के लिये ऑनलाइन आवेदन लिये जा रहे है। डेटाबेस रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर पर ओटीपी प्राप्त कर आवेदक को अपना सत्यापन कराना होता है। मोबाइल नंबर डेटाबेस पर उपलब्ध न होने पर कई बार आवेदक इन सेवाओं का लाभ नहीं ले पाते हैं। संबंधित वाहन के विरूद्ध अन्य प्रणालियों से चालान जारी होने पर डेटाबेस पर सही नंबर न होने के कारण कई बार वाहन स्वामियों को चालान के संबंध में जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती है। चालान का भुगतान लंबित होने पर ऐसे व्यक्तियों को परिवहन विभाग की सेवाओं से वंचित रहना पड़ सकता है। न्यायालयीन कार्रवाई की जाने पर उन्हें कोर्ट से समन भी आ सकते हैं।

सैर पर निकली महिला पर हमला, पड़ोसी ने ब्लेड मारी

कुत्ते को लेकर हुआ था विवाद, आरोपी धमकी देकर फरार

ग्वालियर ■ निसं

हजीरा थाना क्षेत्र के इंद्रा नगर में शनिवार शाम एक महिला पर उसके पड़ोसी ने ब्लेड से हमला कर दिया। घटना उस समय हुई जब महिला अपनी देवरानी और बच्चों के साथ सैर के लिए जा रही थी। हमलावर ने ताबड़तोड़ ब्लेड से वार किए, जिसमें एक वार महिला के गले पर और दूसरा हाथ पर लगा। घायल महिला को तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया।

कुत्ते की गंदगी से शुरू हुआ विवाद: पुलिस के अनुसार, पीड़ित महिला दीप्ति (35) पत्नी राजेंद्र प्रजापति गृहिणी हैं। उनके घर के सामने आरोपी सुनील चौहान रहता है, जिसने एक कुत्ता पाल रखा है। यह कुत्ता अक्सर दीप्ति के दरवाजे पर गंदगी कर देता था। कई बार समझाने के बावजूद सुनील ने कुत्ते को नहीं बांधा। दो दिन पहले दीप्ति ने इसका विरोध किया तो विवाद हुआ था। उसी से बौखलाए सुनील ने बदला लेने की ठान ली।

गाली-गलौच के बाद ब्लेड से हमला: शनिवार शाम दीप्ति अपनी देवरानी रचना और बच्चों के साथ मनोरंजन पार्क की ओर जा रही थी। रास्ते में ही सुनील मिला और गाली-गलौच करने लगा। जब महिला ने विरोध किया तो आरोपी बोला- आज मौका है और जेब से ब्लेड निकालकर वार कर दिया। पहला वार गले पर लगा, दूसरा वार हाथ पर। महिला ने समय रहते खुद को पीछे किया, वरना ब्लेड सीधे गले में लगता।

धमकी देकर फरार हुआ आरोपी: हमले के बाद आसपास लोग इकट्ठा होने लगे तो आरोपी जान से मारने की धमकी देकर वहां से भाग गया। मामले की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायल महिला को अस्पताल पहुंचाया। उसकी शिकायत पर आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया। हजीरा थाना प्रभारी शिवमंगल सिंह सेंगर ने बताया कि आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है। वह फिलहाल फरार है और पुलिस की टीम उसकी तलाश में दबिश दे रही है। जल्द ही उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा।सैर पर निकली महिला पर हमला, पड़ोसी ने ब्लेड मारीग्वालियर में कुत्ते को लेकर हुआ था विवाद, आरोपी धमकी देकर फरार।

कथावाचक पंडित प्रदीप मिश्रा के पुराने मकान का हिस्सा ढहा

सीहोर। सीहोर के नमक चौराहा क्षेत्र में रविवार को एक पुराने खाली मकान का हिस्सा अचानक ढह गया। यह मकान कथावाचक पंडित प्रदीप मिश्रा का है। हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ। नगर पालिका के अतिक्रमण प्रभारी तिलक खाती ने बताया कि इस मकान को दो माह पूर्व नोटिस देकर खाली करा लिया गया था। सीहोर कलेक्टर बालगुरु ने तीन माह पहले निकायों को जर्जर भवनों की पहचान कर कार्रवाई के निर्देश दिए थे। निकायों द्वारा 179 जर्जर भवनों के मालिकों को नोटिस जारी किए गए थे। 1 अगस्त 2024 को जिला प्रशासन के निर्देश पर राजस्व, पुलिस और नगर पालिका की टीम ने शहर के कई जर्जर मकानों को ध्वस्त किया था। इस दौरान नगर पालिका की टीम ने 5 जर्जर मकानों को गिराया था। इसके बाद से जर्जर मकानों को तोड़ने की कार्रवाई रुक गई थी। कलेक्टर ने बारिश से प्रभावित होने वाले पुल-पुलियों की पहचान कर सुरक्षा उपाय करने के भी निर्देश दिए थे।

वाहनों में हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट लगाने चलेगा अभियान

खंडवा ■ निसं

प्रदेश के पंजीकृत वाहनों में हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट (एचएसआरपी) अनिवार्य रूप से लगाए जाने के लिए विशेष अभियान चलाया जायेगा। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकारों को इस संबंध में आदेश दिये हैं। प्रदेश में 1 अप्रैल 2019 के बाद पंजीकृत वाहनों में एचएसआरपी नंबर प्लेट लगाई जा रही है। सुप्रीम कोर्ट ने कार्य में तेजी लाने के निर्देश सभी राज्यों के परिवहन विभाग के अधिकारियों को दिए हैं। वाहन पोर्टल में डाटा अपडेट करने के काम में तेजी लाई जा रही है। प्रदेश भर में दल गठित कर संबंधित वाहन डीलर के माध्यम से एनआईसी वाहन पोर्टल पर अद्यतन स्थिति दर्ज की जायेगी। इसके लिये एक विशेष अभियान चलाया जायेगा। परिवहन विभाग ने एचएसआरपी प्लेट बदलने का कार्य आगामी 3 माह में पूर्ण करने के निर्देश जिला परिवहन अधिकारियों को दिए हैं। निर्देश में कहा गया है कि अपने जिले के समस्त डीलरों से निरंतर सम्पर्क में रहते हुए वाहनों में एच.एस.आर.पी नम्बर प्लेट लगाई जाए। जिन वाहनों में एचएसआरपी नहीं है उन्हें पॉल्यूशन अंडर कंट्रोल सेंटर द्वारा प्रमाण पत्र, डुप्लीकेट पंजीकरण प्रमाण पत्र (आरसी) जारी करने, पंजीकरण प्रमाण पत्र में पता बदलना, शुल्क देकर आरसी विवरण देखना संभव नहीं हो सकेगा। साथ ही वाहनों के स्वामित्व बदलने, हाइपोथिकेशन जोड़ना और हटाना, नवीन -डुप्लीकेट परमिट जारी करना, परमिट का हस्तांतरण और नवीनीकरण, कराधान प्राधिकार के साथ अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी करना और वाहन का पंजीयन निरस्तीकरण करना संभव नहीं हो सकेगा। जारी निर्देश में कहा गया है कि वाहन की स्थाई-अस्थायी अनुज्ञाएं जारी करने, डुप्लीकेट फिटनेस प्रमाण पत्र जारी करने, वाहनों का फिटनेस प्रमाण पत्र जारी करना, वाहनों के पंजीयन नवीनीकरण करने के साथ ही वाहन पोर्टल के माध्यम से दी जाने वाली सभी सुविधाएं मोटर मालिकों को नहीं मिल सकेंगी। परिवहन विभाग ने स्पष्ट किया है कि एचएसआरपी नंबर प्लेट होने से इन्फोर्समेंट के तहत लगाए गए कैमरे में दर्ज हो पायेंगी। इससे रोड सेफ्टी का भी पालन हो पायेगा। जिला परिवहन अधिकारियों को इस कार्य की नियमित मॉनिटरिंग के लिये भी कहा गया है।

जवाहर टेकरी पर तैयारियों का किया निरीक्षण, निगम कमिश्नर बोले

सुरक्षित-सम्मानजनक तरीके से होगा बप्पा का विसर्जन

इंदौर ■ निसं

इंदौर की धार रोड स्थित जवाहर टेकरी पर गणेश प्रतिमाओं का विसर्जन किया जाता है। रविवार को यहां की व्यवस्थाओं को देखने के लिए महापौर पुष्यमित्र भार्गव, निगम कमिश्नर शिवम वर्मा, एमआईसी मेंबर और निगम के अधिकारी पहुंचे। यहां उन्होंने व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। सुरक्षा व्यवस्थाओं को लेकर अधिकारियों को जरूरी निर्देश भी दिए।

निगम कमिश्नर शिवम वर्मा ने बताया कि 7 सितंबर को गणेश प्रतिमाओं का विसर्जन जवाहर टेकरी पर होगा। यहां नगर निगम द्वारा जो व्यवस्थाएं की जाती हैं उसे देखा है। किस प्रकार सुरक्षित और सम्मानजनक तरीके से बप्पा का विसर्जन हो इसकी तैयारियां की जा रही हैं। कहां-कहां पर कन्वेयर बेल्ट लगेगी, किसी तरह से सारे अरेंजमेंट होंगे, किन-किन लोगों की ड्यूटी लगेगी ये सब तय किया है। यहां पर सारी टिम मौजूद थी। सभी ने अपना रोल समझ लिया है। उन्होंने कहा कि यहां पूरे शहर की व्यवस्था रहेगी। साथ ही जोन लेवल पर भी व्यवस्था रहेगी। जो छोटी प्रतिमाएं रहेंगी उनकी जोन लेवल पर ही विसर्जन करने की व्यवस्था रहेंगी। टेकरी के साथ ही एप्रोच रोड को भी बेहतर किया जाएगा। यहां की सभी व्यवस्थाओं के साथ ही सारे पाइंट नोट कर लिए हैं।

35 फीट गहरा है यहां पानी: निगम कमिश्नर ने बताया कि यहां 35 फीट गहरा पानी है। आपदा की भी व्यवस्था के साथ ही गोताखोर और अस्थायी विद्युत व्यवस्था की जाएगी। 50 लोगों की टीम यहां रहेगी। हमारा प्रयास रहेगा कि कुंड के पास हमारी टीम ही गणेश प्रतिमाओं का विसर्जन करे। हमारी टीम को कुंड की पूरी जानकारी रहेगी। उन्होंने अपील की है कि गणपति बप्पा के विसर्जन के दौरान हम पूरी सावधानी बरतें।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर निकली साइकिल रैली

सांसद आलोक शर्मा सहित जनप्रतिनिधि और स्कूली बच्चे हुए शामिल

सीहोर, निप्र। सीहोर में राष्ट्रीय खेल दिवस के तीसरे दिन रविवार को आवासीय खेलकूद संस्थान से एक विशेष साइकिल रैली का आयोजन किया गया। रैली में सांसद आलोक शर्मा ने भी हिस्सा लिया।

रैली आवासीय खेल कूद परिसर से शुरू होकर बस स्टैंड तक निकाली गई। इसमें भाजपा जिला अध्यक्ष नरेश मेवाड़ा, नगर पालिका अध्यक्ष प्रिंस राठौर, कलेक्टर बालागुरू के और एसपी दीपक कुमार शुक्ला भी शामिल हुए। स्कूली बच्चों और स्थानीय नागरिकों ने भी रैली में भाग लिया। यह आयोजन संडे ऑन साइकिल सीहोर कार्यक्रम का हिस्सा था। जिला खेल स्तरीय इस साइकिल रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। कार्यक्रम में मौजूद जनप्रतिनिधियों ने लोगों से अपील की कि वे अपने परिवार और मित्रों के साथ इस अभियान में शामिल हों।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के फिट इंडिया अभियान में साइकलिंग को एक महत्वपूर्ण गतिविधि माना गया है। कार्यक्रम में जिला खेल अधिकारी रुबिका दिवान सहित कई साइकल राइडर्स भी मौजूद रहे।

भाजपा ने निकाली राहुल के पुतले की अर्थी सीएम बोले

परेशानी है तो नाना-नानी के पास जाएं, बिहार में पीएम को कहे थे अपशब्द

भोपाल ■ निसं

बिहार के दरभंगा में कांग्रेस की सभा के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को गाली दिए जाने के विरोध में रविवार को भोपाल में भाजपा महिला मोर्चा की कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी के पुतले की अर्थी निकाली।

प्रदर्शन के लिए भाजपा महिला मोर्चा की बड़ी संख्या में कार्यकर्ता भोपाल के रेड क्रॉस चौराहे पर इकट्?ठी हुईं और नारेबाजी करते हुए कांग्रेस कार्यालय की ओर बढ़ने लगीं। हालांकि, पुलिस ने उन्हें सिद्धांता हॉस्पिटल के सामने बैरिकेडिंग लगाकर रोक दिया।

उधर, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा- यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि राहुल गांधी देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मां के लिए गलत बयान दे रहे हैं। इतनी ही परेशानी है तो उन्हें अपने नाना-नानी के पास चले जाना चाहिए। इस जगत में रहने का उन्हें कोई हक नहीं है।

माया बोलीं- अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे: भाजपा महिला मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष माया नारोलिया ने कहा कि महिलाओं का अपमान अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। क्या महिलाएं राजनीति और अन्य क्षेत्रों में अपमान सहने के लिए काम करती है? हम राहुल गांधी से पूछना चाहते हैं, क्या आपके घर में बहन-बेटियां नहीं हैं? क्या आप इसी तरह माताओं और बहनों का अपमान करते रहेंगे?

राहुल गांधी सार्वजनिक रूप से माफी मांगें: माया नारोलिया ने राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी को चेतावनी देते हुए उन्होंने कहा कि अब मातृ शक्ति जाग चुकी है। अगर अब भी कांग्रेस ने होश नहीं संभाला तो बची-खुची कांग्रेस भी पूरी तरह स्वाहा हो जाएगी।

बारिश हुई तो रोड पर रखकर अर्थी तोड़ी

प्रदर्शन के दौरान बारिश शुरू हो गई, जिसके चलते महिला मोर्चा की कार्यकर्ताओं ने अर्थी को वहीं तोड़ दिया और प्रदर्शन खत्म किया। विरोध प्रदर्शन में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा, महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद माया नारोलिया और भाजपा जिला अध्यक्ष रविंद्र यति, प्रदेश उपाध्यक्ष सीमा सिंह, नेहा बग्गा भी शामिल रहीं।

संक्षिप्त समाचार

महापौर मालती राय ने किया ओणम फेस्टिवल का शुभारंभ

भोपाल। महापौर श्रीमती मालती राय ने हेमा हॉयर सेकेण्ड्री स्कूल के सभाकक्ष में ओणम फेस्टिवल का शुभारंभ किया। महापौर श्रीमती मालती राय ने रविवार को हेमा हॉयर सेकेण्ड्री स्कूल के सभाकक्ष में आयोजित ओणम फेस्टिवल का शुभारंभ किया। मलयालम मिशन मध्यप्रदेश चेप्टर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में महापौर श्रीमती राय ने ओणम की बधाई एवं शुभकामनाएं दी और इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनन्द भी लिया। कार्यक्रम में युनाईटेड मलयाली एसोसिएशन के पदाधिकारी व बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक मौजूद थे।

चोरी करने घर में घुसा बदमाश, जमकर हुई धुनाई

भोपाल। ऐशबाग थाना इलाके में स्थित जगन्नाथ कॉलोनी में देर रात एक बदमाश चोरी की नियत से घर में जा घुसा। सामान चुराने के दौरान हुई आवाज सुनकर फरियादी की नींद खुल गई। उस समय बदमाश अलमारी से सामान निकाल रहा था। फरियादी ने उसे दबोचते हुए लात-घूंसों से जमकर धुन दिया। शोर की आवाजे सुनकर परिवार के अन्य लोग भी आग गये और बदमाश को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया है। थाना पुलिस के अनुसार जगन्नाथ कालोनी बांबे बैकरी वाली गली, ऐशबाग में रहने वाले आमिर अली पिता बाबू खान (32) कंस्ट्रक्शन का काम करते है। बुधवार-गुरुवार की रात वह अपने कमरे में सो रहा था। आधी रात करीब 1 बजे घर में किसी के आहट होने और सामान गिरने की आवाज होने से उनकी नींद खुल गई। जाकर देखने पर उन्हें बेडरूम में एक अज्ञात बदमाश नजर आया जो अलमारी खोलकर उसमें रखा सामान समेट रहा था। आमिर ने उसे पकड़ने की कोशिश की तब बदमाश ने खुद को बचाने के प्रयास में मारपीट करनी शुरु दी। आमिर ने भी उसकी पिटाई करते हुए मदद के लिये शोर मचाया। तब उसके भाई मौके पर पहुंचे और बदमाश को पकड़ लिया। उसने अपना नाम सद्दाम हुसैन पिता शाहिद अली (34) ग्राम दौताई पोस्ट दौताई जिला हापुड़ उत्तर प्रदेश बताया। आमिर और उसके भाइयों ने बदमाश को पुलिस के हवाले कर दिया है। फरियादी की शिकायत पर आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर आगे की पूछताछ की जा रही है।

कार की चपेट में आये बाइक सवार वृद्ध की अस्पताल में मौत

भोपाल। शहर के अरेरा हिल्स थाना इलाके में स्थित केएन प्रधान तिराहा पर कार ने बाइक सवार वृद्ध को को टक्कर मार दी। कार की चपेट में आकर वृद्ध गंभीर रूप से घायल हो गए। उसे इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया जहॉ इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। थाना पुलिस के अनुसार श्यामला हिल्स में रहने वाले मोहम्मद अरीब (55) बीती 11 अगस्त को बाइक से निजी कार्य से राजभवन से पॉलीटेक्निक चौराहा की तरफ जा रहे थे। दोपहर करीब दो बजे जैसै ही वह केएन प्रधान तिराहे के पास पहुंचे तभी एक तेज रफ्तार कार चालक ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में उन्हें गंभीर चोट आई थी। मौके पर तैनात यातायात पुलिस कर्मचारियों ने टक्कर मारने वाले कार चालक को रोका और उसी की कार से घायल अरीब को इलाज के लिए मालवीय नगर स्थित निजी अस्पताल पहुंचाया गया। घटना की सूचना मिलने पर परिजन अस्पताल पहुंचे वहॉ अरीब आईसीयू में भर्ती थे, और बेहोशी की हालत में थे। बाद में घरवालों ने थाने जाकर टक्कर मारने वाले कार चालक के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया था। इलाज के दौरान गुरुवार रात उनकी हालत हालत लगातार खराब होती गई और उन्होनें दम तोड़ दिया।

सांसद और विधायक ने दक्षिण-पश्चिम विस के बूथ 208 पर सुनी मन की बात

मन की बात कार्यक्रम से देश सेवा में लगे लोगों का पता चलता है

भोपाल ■ निसं

दक्षिण-पश्चिम विधानसभा क्षेत्र के वार्ड क्रमांक 46 में बूथ 208 पर भारतीय जनता पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णु दत्त शर्मा प्रदेश महामंत्री व दक्षिण-पश्चिम विधानसभा क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक भगवानदास सबनानी खंडवा महापौर अमृता यादव श्योपुर जिलाध्यक्ष शशांक भूषण प्रदेश प्रवक्ता नेहा बग्गा मंडल अध्यक्ष प्रियेश उपाध्याय एवं बूथ अध्यक्ष राहुल देवधर ने मन की बात कार्यक्रम को सुना।

इस अवसर पर क्षेत्रीय विधायक भगवानदास सबनानी ने कहा कि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के

लोकप्रिय कार्यक्रम मन की बात को लेकर लोगों में उत्सुकता रहती है, और इसके माध्यम से उन्हें नई-नई जानकारी के साथ ही देश सेवा में लगे हुए लोगों के बारे में पता चलता है। छोटे से छोटे कस्बे के नागरिक द्वारा भी किया गया सकारात्मक काम का उल्लेख भी हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री करते हैं, जो सभी को सकारात्मक काम करने की प्रेरणा देता है।

मैं इस अवसर पर उपस्थित सभी महानुभावों का स्वागत करता हूं और प्रत्येक कार्यकर्ता से अनुरोध करता हूं के माननीय प्रधानमंत्री के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने में अपना सहयोग दें। मन की बात कार्यक्रम में विनोद प्रजापति पूर्व पार्षद आसाराम शर्मा राम सागर हरिओम गिरी अनीता चौहान शीला चंदेल गीता चौहान सहित बूथसमिति के सदस्यगण उपस्थित रहे।

श्री हिंदू उत्सव समिति का चुनाव, पांच उम्मीदवारों की दावेदारी

दिन भर रही गहमा,गहमी 11 हजार से अधिक सदस्य संख्या 5600ने डाले वोट

भोपाल, निप्र। राजधानी की सबसे प्रभावशाली संस्थाओं में से एक श्री हिंदू उत्सव समिति के अध्यक्ष पद के चुनाव के लिए आज रविवार को मतदान संपन्न हुए। गुफा मंदिर, लालघाटी स्थित मानस भवन में सुबह 9 बजे से मतदान की प्रक्रिया शुरू हुई, जो शाम 5 बजे तक चली। इस चुनाव में समिति के 11 हजार से अधिक आजीवन सदस्य अपने मताधिकार का प्रयोग करने वाले थे जिसमें मात्र 5600सदस्यों ने अपने मत का उपयोग किया।

अध्यक्ष पद की इस प्रतिष्ठित जंग में पांच दावेदार मैदान में हैं। इनमें चंद्रशेखर तिवारी, दीपेश श्रीवास्तव, कैलाश

बेगवानी, हेमंत कुशवाह और नारायण कुशवाह शामिल हैं। मुख्य चुनाव अधिकारी डॉ. पीसी कोठारी ने बताया कि मतदान के लिए समिति द्वारा जारी आजीवन सदस्यता कार्ड, आधार कार्ड अथवा भारत निर्वाचन आयोग का फोटोयुक्त मतदाता पहचान पत्र अनिवार्य रखा गया था। इसके अलावा मतदाता का नाम समिति की सदस्यता सूची में होना जरूरी है। चंद्रशेखर तिवारी इससे पहले संस्कृति बचाओ मंच से जुड़े हैं। यह भी मैदान में हे।

मतदान में उत्साह देखा गया, देर रात को आएगा नतीजा: समिति के वरिष्ठ सदस्य प्रकाश मालवीय ने सभी मतदाताओं से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में मतदान करें और योग्य प्रत्याशी को विजयी बनाएं। वहीं सेवा संकल्प युवा संगठन ने भी सनातनियों से भारी संख्या में मतदान करने का आह्वान किया है।

आल इंडिया ओबीसी रेलवे एम्पलाइज फेडरेशन के चुनाव सम्पन्न

भोपाल ■ निसं

आल इंडिया ओबीसी रेलवे एम्पलाइज फेडरेशन के चुनाव भोपाल में सम्पन्न हुए । जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद पर प्रशांत सूर्यवंशी एवं राष्ट्रीय महासचिव के पद पर पुरुषोत्तम यादव निर्वाचित हुए। चुनाव हेतु संपूर्ण भारतवर्ष की रेलवे से विभिन्न जोनों के लगभग 400 पदाधिकारी उपस्थित रहे ।

चुनाव में राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय महासचिव सहित कुल 12 पदाधिकारी चयनित हुए हैं । सूची संलग्न। रेलवे बोर्ड के निर्देश पर चुनाव प्रक्रिया के आब्जर्वर हेतु भारतीय रेल सेवा के वरिष्ठ अधिकारी भोपाल मंडल सोहन सिंह परमार जी उपस्थित रहे। फेडरेशन के सभी पदाधिकारियों को भोपाल मंडल की एसोसिएशनों के प्रमुख पदाधिकारी पप्पू यादव, विजय यादव , सुरेश चंद्र मौर्य, अमर सिंह, राहुल रायकवार, प्रदीप यादव एवं श्याम sanodiya सहित सभी प्रमुख पदाधिकारियों तथा सदस्यों ने बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करी हैं।

भोपाल। श्री गणेश उत्सव समिति नई बस्ती निरूपम कालोनी के सामने जाट खेडी भवानी नगर भोपाल।

भोपाल। श्री रिद्धि सिद्धि गणेश उत्सव समिति वन्दना नगर, गेहुखेड़ा की मनमोहक झाकी

भोपाल में स्मार्ट मीटर से लोग परेशान

बढ़े हुए बिल लेकर पहुंचे रहवासी, बिजली कंपनी का करेंगे घेराव

भोपाल, निप्र। भोपाल के गोंडीपुरा इलाके में रविवार को स्मार्ट बिजली मीटर लगने के बाद बढ़े हुए बिल लेकर उपभोक्ताओं ने रोष जताया। मौके पर पहुंचे कांग्रेस नेता मनोज शुक्ला ने आक्रोशित लोगों की समस्याओं को सुना और बिजली के बिल देखकर उपभोक्ताओं से चर्चा की। यदि समस्या का निराकरण नहीं हुआ तो विद्युत वितरण कंपनी के कार्यालय का घेराव की चेतावनी दी है।

राजधानी भोपाल में जब से बिजली की स्मार्ट मीटर लगे हैं लोगों की परेशानी बढ़ गई है। कई क्षेत्रों से लोग बढ़े हुए बिल लेकर बिजली कार्यालय पहुंच रहे हैं। लोगों का आक्रोश खुलकर सामने आने लगा है। भोपाल के गोंडीपुरा इलाके में रविवार को स्मार्ट बिजली मीटर लगने के बाद आए बढ़े हुए बिल लेकर उपभोक्ताओं ने रोष जताया। मौके पर पहुंचे कांग्रेस नेता मनोज शुक्ला ने आक्रोशित लोगों की समस्याओं को सुना और मौके पर बिजली के बिल देखकर उपभोक्ताओं से चर्चा की।

लोगों ने कहा-अचानक बिल दो गुना तक बढ़े: लोगों ने कहा कि स्मार्ट मीटर लगने के बाद अचानक उनके बिल दो गुना तक बढ़ चुके हैं जिसकी सुनवाई किसी भी स्तर पर नहीं हो रही है। कांग्रेस नेता मनोज शुक्ला ने लोगों को आश्वस्त किया है कि वह जल्द ही इस मामले में बिजली कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा करेंगे। यदि समस्या का निराकरण नहीं हुआ तो विद्युत वितरण कंपनी के महाप्रबंधक कार्यालय का घेराव भी किया जाएगा।

फर्जी चालान बनाकर परेशान कर रहे: गोंडीपुरा में बड़ी संख्या में इकट्ठा हुई महिलाओं ने अपने अपने बढ़े हुए बिजली के बिल और फर्जी चालान की कॉपी दिखाकर बताया कि बिजली विभाग कैसे अपनी मनमानी करते हुए उपभोक्ताओं को बढ़े हुए बिल और फर्जी चालान बनाकर परेशान कर रहे हैं। स्मार्ट मीटर के लगते ही अचानक सभी जगह बढ़े हुए बिजली के बिल आने लगे हैं।

बिल जमा नहीं हुआ तो ऑटोमैटिक बंद हो जाती है बिजली: स्मार्ट मीटर की सबसे बड़ी समस्या यह है की नियत तिथि तक किसी कारण वश बिल ना जमा होने की स्थिति में बिजली ऑटोमैटिक बंद हो जाती है और ऑनलाइन भुगतान करने पर उसे दोबारा चालू होने में 24 घंटों का इंतजार करना पड़ता है। उपभोक्ता को कई परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का अनावरण एवं ऐप का लोकार्पण आज

भोपाल। विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का अनावरण एवं ऐप का लोकार्पण मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 1 सितंबर 2025 को मुख्यमंत्री निवास पर करेंगे। प्रात: 9-00 बजे शौर्य स्मारक पर कॉलेज, विश्वविद्यालय के युवाजन एवं छात्र-छात्राएँ एकत्रित होंगे। शौर्य स्मारक से बाइक/ बस रैली भारत का समय - पृथ्वी का समय आरंभ होगी जो रवींद्र भवन तक जायेगी। रवींद्र भवन में गाड़ियाँ पार्क कर रैली पैदल मार्च में बदलकर मुख्यमंत्री निवास के द्वार तक पहुँचेगी। इस मौके पर विक्रमादित्य वैदिक घड़ी- भारत के समय की पुनर्स्थापना की पहल विषय युवा संवाद कार्यक्रम भी होगा। जिसमें मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव युवाओं से संवाद करेंगे। मुख्यमंत्री के संस्कृति सलाहकार श्रीराम तिवारी ने कहा कि विक्रमादित्य वैदिक घड़ी भारतीय काल गणना पर आधारित विश्व की पहली घड़ी है। भारतीय काल गणना सर्वाधिक विश्वसनीय पद्धति का पुनरस्थापन विक्रमादित्य वैदिक घड़ी के रूप में उज्जैन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 29 फरवरी 2024 को किया गया था।

भोजपाल गरबा महोत्सव दूसरा साल, जम्बूरी मैदान पर सात दिनों तक होगी आराधना

काछी, तिमली, सनेड़ो, हुड्डो जैसी नई स्टाइल सीख रहे प्रतिभागी

गुजरात के विशेषज्ञ ट्रेनरों की टीम प्रतिभागियों को दे रही प्रशिक्षण

भोपाल, निप्र। राजधानी के जम्बूरी मैदान भेल में आयोजित होने वाले भोजपाल गरबा महोत्सव के लिए गरबा के लिए प्रशिक्षण ले रहे प्रतिभागियों को इस बार बहुत कुछ नया सीखने को मिल रहा है। इस बार प्रतिभागी 5 गरबा शैली, 5 डांडिया और 2 तीन ताली के साथ ही काछी, तिमली, सनेड़ो, हुड्डो जैसी नई स्टाइल सीख रहे हैं। यह सब भोजपाल गरबा महोत्सव में में देखने को मिलेगा। अहमदाबाद गुजरात से टीम के साथ प्रशिक्षण देने आए प्रशिक्षक राहुल गुप्ता ने बताया कि गुजरात की परंपरागत ढोल को हम यहां पर भी फॉलो कर रहे हैं। हमारी टीम में दो

महिलाएं, 4 पुरुष सहित 6 ट्रेनर और दो ढोली हैं। हम सभी बीते पांच सालों से अधिक समय से गरबा की ट्रेनिंग दे रहे हैं।

शहर में कई जगह चल रहा प्रशिक्षण: शहर में श्री कृष्ण मंदिर विजय मार्केट बरखेड़ा भेल और गुजराती भवन आनंद विहार स्कूल के सामने, 74 बंगला के साथ ही कई अन्य जगहों पर प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इन दोनों सेंटरों पर गुजरात के विशेषज्ञ ट्रेनरों द्वारा 500 से ज्यादा प्रतिभागी सुर ताल के साथ अत्याधुनिक गरबा का प्रशिक्षण ले रहे हैं। प्रतिभागियों ने बताया हर दिन सीख रहे अलग स्टेप: प्रतिभागी नीलू बघेल, शिवानी शर्मा, अदिति बैरागी सहित अन्य प्रतिभागियों ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान हर दिन अलग-अलग स्टेप सिखाया जा रहा है।

सात दिनों तक होगी आराधना

माता रानी की आराधना के लिए सात दिनों तक गरबा महोत्सव आयोजित किया जाएगा। 23 से 29 सितम्बर तक आयोजित होने वाले गरबा महोत्सव के लिए रविवार से प्रशिक्षण शुरू हो गया। प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिलाने के लिए गुजरात से विशेष प्रशिक्षित टीम को बुलाया गया है।

इनाम में मिलेगी, स्कूटी, सोना- चांदी: गरबा महोत्सव में शामिल होने वाले प्रतिभागियों को सोने-चांदी के जेवरात सहित अन्य पुरस्कार दिए जाएंगे। प्रशिक्षण लेकर गरबा करने वाले प्रथम आने वाले प्रतिभागी को एक्टिवा इनाम में दिया जाएगा। विशेष ईनाम में ज्वेलरी, टीवी, मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स सहित प्रतिदिन अन्य ईनाम दिया जाएगा। 1 लाख किलो वॉट के साउंड सिस्टम और म्यूजिकल बैंड पर प्रस्तुति दी जाएगी।

सेवानिवृत्त होने वाले 30 रेलसेवकों को दी गई भावभीनी विदाई

भोपाल, निप्र। मंडल में रेल सेवा से निवृत्त हुए 30 रेलसेवकों का मंडल कार्यालय में आयोजित एक गरिमामयी समारोह में भावभीनी विदाई दी गई। जिसमें 1 अधिकारी एवं 29 रेल कर्मचारी शामिल थे।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री पंकज त्यागी की अध्यक्षता में सेवानिवृत्त कर्मचारियों को उनके अमूल्य योगदान के लिए सम्मानित किया गया। समारोह में सेवानिवृत्त कर्मचारियों को अंतिम निपटान राशि का भुगतान एनईएफटी माध्यम से किया गया। साथ ही उन्हें स्वर्ण पदक, पेंशन भुगतान आदेश, मानार्थ पास, परिचय पत्र तथा उदारीकृत चिकित्सा सुविधा कार्ड प्रदान किए गए।

इस समारोह सेवानिवृत

रेलकर्मियो को कुल राशि 1.21 करोड़ का भुगतान किया गया। उक्त अवसर पर SBI बैंक की ओर से सेवानिवृत कर्मचारियों को पेंशन स्कीम के बारे में अवगत कराया गया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी, सहायक कार्मिक अधिकारी (कल्याण), सहायक मंडल वित्त प्रबंधक, मान्यता प्राप्त यूनियन के प्रतिनिधि एवं आल इंडिया रिटायर्ड रेलवेमेन्स फेडरेशन के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

अनमोल वचन

शिक्षा किसी घड़े को भरने जैसा नहीं है यह तो अग्नि प्रज्वलित करने के समान है।
डब्ल्यू बी. बीट्स

अगर आप कदम उठाने से पहले सब सुनिश्चित करने की प्रतीक्षा करते हैं तो संभव है कि आप कभी ज्यादा कुछ कर ही न पाए।
अज्ञात

सम्पादकीय

मनोज जारंगे आर-पार की लड़ाई के मूड में

मराठा आरक्षण के पुरोधा मनोज जारंगे इस बार आर पार की लड़ाई लड़ने की मुद्रा में है। वह मुंबई के आजाद मैदान में आमरण अनशन में बैठ गए हैं। सरकारी नौकरी और शिक्षा में मराठा समुदाय को आरक्षण देने के मुद्दे पर वह अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर हैं। उनके साथ हजारों की संख्या में आंदोलनकारी आर्थिक राजधानी मुंबई में पहुंचे हुए हैं। जिसके कारण राजधानी का पहिया एक तरह से थम गया है। शनिवार को सेवा निवृत्ति न्यायाधीश संदीप शिंदे ने मनोज जरंगे से बातचीत की। सितंबर 2023 में मराठा समुदाय को कुनबी जाति का प्रमाण पत्र एवं आरक्षण के संबंध में पूर्व मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने हाईकोर्ट के जज संदीप शिंदे की अध्यक्षता में कमेटी गठित की थी। पिछले 13 महीने से इस मुद्दे से संबंधित अभिलेखों की जांच यह कमेटी कर रही है। जैसा होता है, आंदोलन को टालने के लिए इस तरह की कमेटियां बना दी जाती हैं। मनोज जारंगे कई बार आंदोलन कर चुके हैं। उनके साथ लाखों लोगों ने प्रदर्शन किया, लेकिन हर बार सरकार ने उन्हें धोखा दिया है। मराठा समाज की आरक्षण मांग कोई नई-नही है। मराठा समाज 10 फ़ीसदी आरक्षण चाहता है। कुनबी समाज को मराठाओं में शामिल कराना चाहता है। महाराष्ट्र में 50 फ़ीसदी से ज्यादा आरक्षण होने के कारण सरकार के लिए यह मांग मानना संभव नहीं है। संवैधानिक मर्यादा एवं सुप्रीम कोर्ट के आदेश को ध्यान में रखते हुए महाराष्ट्र सरकार को आरक्षण का रास्ता कहीं से निकलता हुआ दिख नहीं रहा है। इस बार मनोज जारंगे अनिश्चित भूख हड़ताल पर बैठ गए हैं। इससे महाराष्ट्र सरकार के हाथ पैर फूल गए हैं। उच्च न्यायालय के सेवा निवृत्ति न्यायाधीश संदीप शिंदे गांधी मैदान पहुंचे। उन्होंने मनोज जारंगे को मनाने का प्रयास किया। न्यायाधीश संदीप शिंदे एवं सरकारी प्रतिनिधि मंडल का यह प्रयास बेनतीजा रहा। मनोज जारंगे का आंदोलन पूर्णता शांतिप्रिय है। लेकिन यह संपूर्ण महाराष्ट्र में फैल गया है। मुंबई को इसकी कीमत चुकानी पड़ रही है। पिछले दो दिनों से मुंबई की रफ्तार एक तरह से थम गई है। करोड़ों रुपए के कारोबार का नुकसान हुआ है। आंदोलन के माध्यम से मराठा आरक्षण की मांग को लेकर यह समुदाय कई प्रयास पूर्व में कर चुका है। ऐसी स्थिति में सरकार को समझ नहीं आ रहा है, वह मराठा आरक्षण आंदोलन का किस तरह से सामना करें। यदि मराठाओं को आरक्षण दिया जाता है, ऐसी स्थिति में अन्य जातियां भी आरक्षण की मांग में सड़कों पर उतरेंगी। विपक्षी राजनीतिक दल इस आंदोलन को हवा दे रहे हैं। जिसके कारण महाराष्ट्र सरकार को बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। मुंबई में गणेश उत्सव के पंडाल सजे हैं। लाखों भक्त दर्शन के लिए सड़कों पर हैं। कानून व्यवस्था की स्थिति को लेकर महाराष्ट्र सरकार की चिंता बढ़ गई है। मुंबई का कारोबार बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। यह सरकार की बड़ी चिंता है। वही मनोज जारंगे का कहना है, सरकार आश्वासन देकर चुप्पी साथ लेती है। इस बार वह आरक्षण लेकर ही वापस लौटेंगे, या अपनी आहुति देंगे। मराठा आरक्षण आंदोलन को लेकर सरकार की चिंतायें बढ़ गई हैं।

चिंतन-मनन

क्षमा भाव आत्मसात करें

बुद्धि का अर्थ है नीर-क्षीर विवेक करने वाली शक्ति और ज्ञान का अर्थ है आत्मा तथा पदार्थ को जान लेना। ज्ञान का अर्थ है आत्मा तथा भौतिक पदार्थ के अन्तर को जानना। आधुनिक शिक्षा में आत्मा के विषय में कोई ज्ञान नहीं दिया जाता, केवल भौतिक तत्वों तथा शारीरिक आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाता है। फलस्वरूप शैक्षिक ज्ञान पूर्ण नहीं हैं। असम्मोह अर्थात संशय तथा मोह से मुक्ति तभी प्राप्त हो सकती है, जब मनुष्य झिझकता नहीं और दिव्य दर्शन को समझता है। वह धीरे-धीरे निश्चित रूप से मोह से मुक्त हो जाता है। क्षमा का अभ्यास करना चाहिए। मनुष्य को सहिष्णु होना चाहिए और दूसरों के छोटे अपराध क्षमा कर देना चाहिए। सत्यम का अर्थ है तथ्यों को सही रूप में अन्यों के लाभ के लिए प्रस्तुत किया जाए। तथ्यों को तोड़ना-मरोड़ना नहीं चाहिए। सामाजिक प्रथा के अनुसार कहा जाता है कि वही सत्य बोलना चाहिए, जिससे दूसरे लोग समझ सके कि सच्चाई क्या है। कोई चोर है और यदि लोगों को सावधान कर दिया जाये कि अमुक व्यक्ति चोर है, तो यह सत्य है। यद्यपि सत्य कभी-कभी अप्रिय होता है, किन्तु कहने में संकोच नहीं करना चाहिए। सत्य की मांग है कि तथ्यों को यथारूप में लोकहित के लिए प्रस्तुत किया जाए। यही सत्य की परिभाषा है। दम का अर्थ है इन्द्रियों को व्यर्थ विषयभोग में न लगाया जाए। अनावश्यक इन्द्रियभोग आध्यात्मिक उन्नति में बाधक है। मन पर भी अनावश्यक विचारों के विरुद्ध संयम रखना चाहिए। इसे शम कहते हैं। मनुष्य धन-अर्जन के चिन्तन में ही सारा समय न गवाए। यह चिन्तन शक्ति का दुरुपयोग है। मन का उपयोग मनुष्यों की मूल आवश्यकताओं को समझने के लिए किया जाना चाहिए। साधुपुरुषों, गुरुओं महान विचारको की संगति में रहकर विचार-शक्ति का विकास करना चाहिए। जो कुछ कृष्णभावनामृत के विकास के अनुकूल हो,

अनुसन्धान संस्थान में तकनीकी हिंदी जानकारों की आवश्यकता

संजय गोस्वामी

हिंदी में कर्मचारी को ट्रेनिंग भी दि जा रही है लेकिन हिंदी को अनुसन्धान संस्थान पर थोपना सही नहीं है क्योंकि विज्ञान या इंजीनियरिंग को हिंदी में कितने लोग पढ़े है यदि पढ़े भी है तो संस्थान में काम करने वाले सभी लोग पढ़े हैं क्या? क्योंकि कुछ लोगों के विज्ञान को हिंदी में पढ़ाई करने से अनुसन्धान का कार्य पूर्ण रूप से नहीं होता है

आज हिंदी का प्रचार जोर शोर से चल रहा है और हिंदी हेतु सरकार द्वारा राजभाषा हेतु उपनिदेशक (राजभाषा) व अनुवाद अधिकारी की नियुक्ति होती है अच्छी बात है अभी हिंदी दिवस भी सामने आ रही है और अभी से ही लोग हिंदी लेख और उससे जुड़े प्रतियोगिता में भाग लेने को इक्छुक है हिंदी में कर्मचारी को ट्रेनिंग भी दि जा रही है लेकिन हिंदी को अनुसन्धान संस्थान पर थोपना सही नहीं है क्योंकि विज्ञान या इंजीनियरिंग को हिंदी में कितने लोग पढ़े है यदि पढ़े भी है तो संस्थान में काम करने वाले सभी लोग पढ़े हैं क्या? क्योंकि कुछ लोगों के विज्ञान को हिंदी में पढ़ाई करने से अनुसन्धान का कार्य पूर्ण रूप से नहीं होता है क्योंकि टीम वर्क के साथ काम करना होता है अनुसन्धान संस्थान में देश के टॉप इंजीनियरिंग कॉलेज जैसे आईआईटी, एनआईटी आदि के स्टूडेंट रहते हैं वहाँ सारा पढ़ाई इंग्लिश में होता है तकनिकी हिंदी और सिर्फ हिंदी में काफी अंतर है वहाँ हिंदी अनुवादक कार्मिक होते हैं जिसे विज्ञान और इंजीनियरिंग की पकड़ कितनी होती है वो सबको पता है नतीजा यह होता है कि टेक्निकल या इंजीनियरिंग शब्दों का हिंदी में कैसे इस्तेमाल किया जाए अंत में गूगल ट्रांसलेशन की मदद लेते हैं और कार्मिक द्वारा हिंदी ट्रांसलेशन में गलत अर्थ आता है जैसे आप फिजिकल प्रोग्रेस को हिंदी में गूगल ट्रांसलेशन करेंगे तो शारीरिक प्रगति आती है जिसे भौतिक प्रगति होना चाहिए उसी तरह परचेज ऑर्डर का गूगल ट्रांसलेट करते हैं तो खरीद आदेश आता है जबकी क्रय आदेश होना चाहिए इसी तरह प्रोक्योरमेंट को गूगल से ट्रांसलेशन करेंगे तो भी खरीद ही आता है जबकी उसका सही अर्थ प्रापण होना चाहिए आरटीडी जो एक इलेक्ट्रिकल यन्त्र है उसे गूगल से ट्रांसलेशन करने पर सेवानिवृत हो जाता है और एक ऐसा ही शब्द ञ्चद्ब जिसे जिसे टाईटेनियम कहा जाता है गूगल उसे तिवारी पकड़ लेता है ऐसे अनगिनत शब्द हैं जो विज्ञान में हिंदी में गूगल कभी सही अर्थ जो उसमें फिट होना चाहिए वो नहीं बतलाता है अत: यदि अनुसन्धान संस्थान में हिंदी को अनिवार्य करना जरुरी नहीं है नहीं तो वहाँ के साइंटिस्ट को शोध करने में कई कठिनाई का सामना करना पड़ता है ऐसे भी वैज्ञानिक खोज देश या विदेश पर निर्भर नहीं करती है वह सिद्धांत को प्रैक्टिकल के सफलता पर निर्भर करती है और जब आईआईटी और लगभग सभी इंजीनियरिंग कॉलेज में इंग्लिश में पढ़ा होता है तो अनुसन्धान संस्थान में वैज्ञानिक हिंदी में कैसे काम करेंगे अत: अनुसन्धान संस्थान में देश के विकास हेतु टेक्नोलॉजी का उपयोग किया जाता है जो समय से कार्य को पूर्ण करना उसका उद्देश्य होता है तकनीकी लेखन से आशय तकनीकी और व्यावसायिक क्षेत्रों में उपयोग किए जाने वाले तकनीकी संचार को लिखने से है। उदाहरण के लिए कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर, इंजीनियरिंग, रसायन विज्ञान, वैमानिकी, रोबोटिक्स, वित्त, चिकित्सा, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स, जैव प्रौद्योगिकी और वानिकी जैसे तकनीकी और व्यावसायिक क्षेत्रों में उपयोग किए जाने वाले तकनीकी संचार को लिखना। अत: आज हिंदी में तकनिकी लेखन यदि शुरुआत से ही की जाए तभी इसका फायदा होगा मंगलवार (5 अगस्त, 2025) को लोकसभा को सूचित किया गया कि सरकार ने आधिकारिक संचार, केंद्रीय सेवाओं या शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी को अनिवार्य बनाने के लिए कोई निर्देश जारी नहीं किया है।गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने डीएमके सांसद कलानिधि वीरस्वामी के एक लिखित प्रश्न के उत्तर में यह बात कही। इस प्रश्न में पूछा गया था कि क्या सरकार ने हिंदी को अनिवार्य बनाने के लिए कोई निर्देश जारी किए हैं। मंत्री ने उत्तर दिया, नहीं, महोदय।

डीएमके सांसद मथेश्वरन वी.एस. द्वारा 2014 से हिंदी के प्रचार-प्रसार पर खर्च की गई धनराशि के बारे में पूछे गए एक अलग प्रश्न का उत्तर देते हुए, मंत्री ने आँकड़े प्रस्तुत किए जिनसे पता चला कि 2014-15 और 2024 के बीच राजभाषा विभाग को आवंटित बजट से ?736.11 करोड़ खर्च किए गए हैं।लेकिन हिंदी अपने देश की भाषा है खुसबू बिखेरती है अत: हिंदी के साथ साथ क्षेत्रीय भाषा का भी सम्मान होएक प्रसिद्ध और शिक्षाप्रद दोहा है।करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान। रसरी आवत जात के सिल पर परत निशान।।

इसमें जो सबसे महत्वपूर्ण बात है वह है अभ्यास। अगर मान लिया जाए अभ्यास ही गलत हो, या गलत दिशा में किया जा रहा हो। तो सफलता मिलने की संभावना लगभग शून्य ही हो जाएगी। इसलिए हर कार्य या अभ्यास के पीछे भी गंभीरता बहुत जरूरी है। गंभीरता और मन से किया गया कार्य ही सार्थक होता है। इसके अभाव में अभ्यास निरर्थक साबित हो जाएगा। हम जो भी प्रश्नों के जवाब देते हैं वह जवाब कहीं न कहीं मौजूद भी होते हैं। अगर उस जवाब में हम अपने अनुभव द्वारा, उनमें नए उदाहरण नहीं जोड़ेंगे। तो मेरे जवाब का कोई मतलब ही नहीं रह जाएगा यानी मेरा जवाब गंभीरता पूर्वक नहीं लिया जाएगा। उसे एक तरह का कॉपी-पेस्ट ही माना जाएगा।

स्कूल के दिनों में एक कहानी पढ़ी थी कि किस तरह एक जादुई बांसुरी वाला व्यक्ति पूरे शहर के लोगों को चूहे के आतंक से आजादी दिलाता है। उस बांसुरी की आवाज में इतना खिंचाव था कि शहर के सारे चूहे उस आवाज के पीछे खींचते चले गए और शहर के बाहर दूरदराज गुफा में बंद कर दिए गए।

कहीं न कहीं यह तकनिकी हिंदी का प्लेटफार्म भी लोगों को जादुई बांसुरी वाले व्यक्ति की तरह ही अपनी ओर आकर्षित करता है और विज्ञान लेखक बगैर पारिश्रमिक के ही लगातार मेहनत करते रहते हैं। जो एक सच्चाई भी है।मेरे हिसाब से विज्ञान लेखन का जो नाता है वह कहीं न कहीं एक आकर्षण से भी जुड़ा हुआ मालूम पड़ता है।

पुरातात्विक अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि आज से लगभग दस हजार वर्ष पूर्व ही मनुष्य ने फसल पैदा करना सीखा था । वेदों में भी इस काल के कृषि विकास का महत्वपूर्ण वर्णन मिलता है। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में कृषि, गोपालन आदि का विशद विवेचन मिलता है। इनमें फसल उत्पादन के लिये आवश्यक भूमि, भूमि की तैयारी, जल तथा सिंचाई, पादप-पोषण, फसल सुरक्षा और मौसम के बारे में बहुत कुछ पढ़ने को मिलता है । साथ ही उस समय के गोपालन के बारे में भी जानकारी मिलती है। जिसका आधुनिक विज्ञान के आधार पर परीक्षण करके बहुत लाभ उठाया जा सकता हैं। इन्हीं जानकारियों को यहाँ क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया हैं। अलग-अलग भाषाओं के लिए अलग-अलग लिपियों का भी प्रयोग मिलता है। यूरोपीय देशों की भाषाओं के लिए रोमन लिपि का प्रयोग मिलता है। ईरान और इराक आदि देशों की भाषाओं के लिए फारसी लिपि का प्रयोग होता है। अरब देशों की भाषाओं और बोलियों के लिए अरबियन लिपि का प्रयोग होता है। भारत में संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश प्राचीन भाषों का प्रयोग मिलता है। हिन्दी, मराठी, गुजराती और पंजाबी आदि आर्य भाषा- परिवार की भाषाओं के लिए अलग-अलग लिपियों का प्रयोग होते हुए भी नागरी लिपि का प्रयोग होता है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, मराठी, कोंकणी, नेपाली और मणिपुरी भाषाओं की अभिव्यक्ति के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग होता है। बांग्ला, उड़िया, असमिया आदि पूर्वी क्षेत्र की भाषाओं की अलग-अलग लिपियां हैं। परन्तु इन भाषाओं का देवनागरी लिपि के निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

पोषण भी पढ़ाई भी: भारत के भविष्य के लिए खेल-आधारित शिक्षा

श्रीमती अन्नपूर्णा देवी

आंगनवाड़ी केंद्र में बच्चों की खिलखिलाती हँसी में, उनके द्वारा गायी जाने वाली कविताओं में और उनके द्वारा बनाए जाने वाले ब्लॉक में हमारे राष्ट्र के भविष्य का सामर्थ्य आकार लेता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, भारत ने अपने सबसे छोटे नागरिकों को अपनी विकास यात्रा के केंद्र में रखा है। प्रधानमंत्री ने—न केवल विश्वविद्यालयों और डिजिटल बुनियादी ढाँचे में निवेश करके, अपितु बच्चे के जीवन की पहली कक्षा- आंगनवाड़ी के अतिशय महत्व को पहचानते हुए हमारी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को नए सिरे से परिभाषित किया

यदि हमें विकसित भारत का निर्माण करना है, तो हमें शुरुआत – अपने सबसे छोटे नागरिकों की क्षमता के विकास से करनी होगी, जहाँ से जीवन का आगाज़ होता है। आंगनवाड़ी केंद्र में बच्चों की खिलखिलाती हँसी में, उनके द्वारा गायी जाने वाली कविताओं में और उनके द्वारा बनाए जाने वाले ब्लॉक में हमारे राष्ट्र के भविष्य का सामर्थ्ये आकार लेता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, भारत ने अपने सबसे छोटे नागरिकों को अपनी विकास यात्रा के केंद्र में रखा है। प्रधानमंत्री ने—न केवल विश्वविद्यालयों और डिजिटल बुनियादी ढाँचे में निवेश करके, अपितु बच्चे के जीवन की पहली कक्षा- आंगनवाड़ी के अतिशय महत्व को पहचानते हुए हमारी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को नए सिरे से परिभाषित किया है।

आज के भारत में, खेल अब सिर्फ़ मनोरंजन भर नहीं, अपितु – नीति है। और इसके परिणाम बिल्कुल स्पखष्ट और विश्व सनीय हैं । पिछले एक दशक में, मोदी सरकार ने प्रारंभिक बाल्या?वस्था के विकास के प्रति अपने दृष्टिकोण को मूलभूत रूप से पुनर्परिभाषित किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 निर्णायक मोड़ साबित हुई, जिसमें यह स्वीकार किया गया कि मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास छह साल की उम्र से पहले ही हो जाता है। यदि हम स्मार्ट, स्वस्थ और अधिक उपयोगी आबादी चाहते हैं, तो हमें वहाँ निवेश करना होगा जहाँ इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है-जीवन के शुरुआती छह वर्षों में।

वैज्ञानिक प्रमाण इस बदलाव का समर्थन करते हैं। सीएमसी वेल्लोर के क्लिनिकल महामारी विज्ञान विभाग द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि जिन बच्चों को 18 से 24 महीने तक व्यवस्थित प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) मिली, उनके आईक्यू में-पाँच साल की उम्र तक 19 अंक तक, और नौ साल की उम्र तक तो 5 से 9 अंक तक की उल्लेखनीय और स्थायी वृद्धि देखी गई। विकासशील भारत के लिए ये वृद्धि बेहद महत्वपूर्ण है। भारत के ये निष्कर्ष वैश्विक शोध के अनुरूप हैं। अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों से पता चलता है कि पाँच साल की उम्र से पहले गुणवत्तापूर्ण ईसीसीई कार्यक्रमों में भाग लेने वाले बच्चों में उच्च आईक्यू, बेहतर सामाजिक कौशल और बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन की संभावना 67 प्रतिशत अधिक होती है। जैसा कि नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. जेम्स हेकमैन की प्रसिद्ध उक्ति है,जितनी जल्दी शुरुआत,उतने बेहतर परिणाम-और उतने ही कुशल रिटर्न उनके शोध में अनुमान व्यकक्त् किया गया है कि प्रारंभिक बाल्या वस्थाट में निवेश से 13-18 प्रतिशत तक रिटर्न मिलता है-जो शिक्षा या नौकरी के प्रशिक्षण के किसी भी अन्य चरण से अधिक है। ईसीसीई के आर्थिक और सामाजिक दोनों ही प्रकार के महत्व को समझते हुए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने पोषण भी पढ़ाई भी नामक एक पहल शुरू की है, जिसने आंगनवाड़ी केंद्रों को जीवंत प्रारंभिक शिक्षा केंद्रों में तब्दीएल कर दिया है। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को पहली बार स्थानीय और स्वदेशी सामग्रियों का उपयोग कर गतिविधि-आधारित और खेल-उन्मुख दृष्टिकोणों पर ध्यान केंद्रित करते हुए व्यवस्थित रूप से ईसीसीई में प्रशिक्षित किया जा रहा है। शिक्षण-अधिगम सामग्री के लिए बजट आवंटन में भी पर्याप्त वृद्धि की गई है, और मासिक ईसीसीई दिवसों को संस्थागत रूप दिया गया है। आज, आंगनवाड़ी केंद्र केवल पोषण का स्थान नहीं है-यह प्रत्येक बच्चे की पहली पाठशाला है, जो जीवन के सबसे महत्वपूर्ण वर्षों में जिज्ञासा, रचनात्मकता और समग्र विकास का पोषण करती है।

मंत्रालय ने इस परिवर्तन को दिशा देने के लिए 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यक्रम-आधारशिला, की शुरुआत की है। आधारशिला बच्चों के केवल बौद्धिक विकास पर ही नहीं, बल्कि भावनात्मक, शारीरिक और सामाजिक कल्याण पर भी ज़ोर देते हुए समग्र विकास पर केंद्रित है। यह खेल के माध्यम से सीखने की व्यीवस्थित प्रक्रिया को आगे बढ़ाता है, जिससे बच्चों को सहयोगपूर्ण वातावरण में बढ़ने और फलने-फूलने का अवसर मिलता है।

बच्चे खेलने के प्रति सहज रूप से आकर्षित होते हैं - अपनी दुनिया के कोने-कोने को खोज और आनंद के स्थान में तब्दी ल कर देते हैं। सही वातावरण के साथ यह प्रवृत्ति आजीवन सीखने की नींव बन जाती है। पोषण भी पढाई भी सुरक्षित, व्यनवस्थित और प्रेरक वातावरण प्रदान करके इस भावना को पोषित करती है जहाँ बच्चे निर्देशित खेल और शिक्षा के माध्यम से फल-फूल सकते हैं। प्रारंभिक बाल्याँवस्थो देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) हमारे देश के भविष्य को आकार देने में बुनियादी भूमिका निभाती है। पोषण भी पढाई भी पहल के तहत, देश भर के आंगनवाड़ी केंद्रों को समग्र प्रारंभिक शिक्षा के लिए पोषण स्थलों में बदला जा रहा है। व्यंवस्थित आधारशिला की 5+1 साप्ताहिक योजना यह सुनिश्चित करती है कि दिन की शुरुआत 30 मिनट के उन्मुक्तिध खेल से हो, उसके बाद भाषा, रचनात्मकता, मोटर स्किल और सामाजिक संपर्क को बढ़ाने वाली व्यमवस्थित गतिविधियाँ हों। दोपहर के पौष्टिक भोजन और आराम के बाद, दिन का समापन बाहरी खेल और बातचीत के साथ होता है, जो मूल्यों को सुदृढ़ करता है और भावनात्मक संबंध बनाता है। व्य वस्थित और निर्बाध खेल के प्रति यह संतुलित दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है, खासकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के आलोक में, जिसने औपचारिक स्कूल प्रवेश की आयु को छह वर्ष कर दिया है। व्यकवस्थित ईसीसीई यह सुनिश्चित करती है कि बच्चे भावनात्मक, सामाजिक और संज्ञानात्मक रूप से स्कूल के लिए तैयार हों। देश भर के अभिभावकों का बढ़ता विश्वास वास्तव में उत्साहजनक है। जो परिवार पहले कभी आंगनवाड़ियों को केवल पोषण केंद्र मानते थे।

भारत पर अमेरिकी टैरिफ और ऊर्जा सुरक्षा

देवेंद्र कुमार बुडाकोटी

ट्रंप प्रशासन द्वारा भारत से निर्यातित वस्तुओं पर 50% टैरिफ लगाना, रूस से भारत के कच्चे तेल आयात के जवाब में, एक संकीर्ण और असंगत नीति को दर्शाता है। भारत की आलोचना की जा रही है जबकि चीन, जापान, तुर्की और यूरोपीय संघ के कई देश रूस से कहीं अधिक तेल आयात कर रहे हैं। यह चयनात्मक रवैया इस टैरिफ को अनुचित और राजनीतिक रूप से प्रेरित बनाता है। इसका असर भारत की अर्थव्यवस्था पर खासकर वस्त्र, रत्न और कीमती धातुओं जैसे क्षेत्रों में देखा जा सकता है। भले ही रोजगार और महंगाई पर इसका पूरा असर अभी स्पष्ट नहीं हुआ है, लेकिन भारत सरकार ने अपने निर्यात बाजारों में विविधता लाने की दिशा में कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। भारत का विशाल घरेलू बाजार, मजबूत कूटनीतिक संबंध और बढ़ती आर्थिक-सेना शक्ति ऐसे दबावों को सफल नहीं होने देगी। भारत और रूस के बीच व्यापार अमेरिकी डॉलर की बजाय रुपये में होता है, जो वैश्विक व्यापार में डॉलर मुक्त व्यवस्था की ओर एक कदम है। भारत मध्य पूर्व देशों के साथ भी रुपये में तेल व्यापार के विकल्प तलाश रहा है। यदि यह चलन बढ़ा, तो यह पेट्रो-डॉलर प्रणाली को चुनौती देगा और अमेरिकी आर्थिक प्रभुत्व को कम कर सकता है। BRICS देशों के बीच रुपये आधारित व्यापार की भारत की पहल भी इसी दिशा में है। अमेरिका की चिंता भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा से अधिक, डॉलर की वैश्विक पकड़ कमजोर होने को लेकर है। भारत की ऊर्जा सुरक्षा लंबे समय से तेल आयात पर निर्भरता से जुड़ी है। भारत अपनी 82% से अधिक कच्चे तेल की जरूरतें आयात से पूरी करता है, जिससे विदेशी मुद्रा पर दबाव और बाहरी झटकों की आशंका बढ़ जाती है। अधिकांश तेल परिवहन क्षेत्र-दोपहिया, कार, ट्रक, बस, विमानन ईंधन और कृषि व थर्मल पावर में डीजल-में खपत होता है। इसे कम करने के लिए भारत ने इलेक्ट्रिक वाहनको बढ़ावा देना शुरू किया है, विशेषकर दोपहिया, यात्री वाहन और बसों में। साथ ही, वैकल्पिक ऊर्जा परियोजनाओं में भी निवेश किया जा रहा है। हिमालय क्षेत्र में जलविद्युत परियोजनाओं की योजना है, पर भूकंपीय जोखिम, भूस्खलन और मानसून के दौरान पर्यावरणीय चुनौतियां गंभीर हैं। इनके लिए पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों का गहन मूल्यांकन जरूरी है। भारत दुनिया में बिजली का एक बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता है। थर्मल पावर (मुख्यत: कोयला) अभी भी 45.4% बिजली उत्पादन में योगदान देता है, जबकि जलविद्युत का हिस्सा लगभग 10.2% है, जिसे अब सौर और पवन ऊर्जा ने पीछे छोड़ दिया है। 2025 तक गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों की क्षमता 217 जीडब्ल्यू पार करने का अनुमान है, जो ऊर्जा नीति में बड़ा बदलाव है। राष्ट्रीय बायोएनेर्जी मिशन, ग्रीन हाइड्रोजन मिशन और रूफटॉप सोलर जैसे कार्यक्रम इस दिशा में अहम हैं। वर्तमान में, भारत की कुल स्थापित बिजली क्षमता का लगभग 49% गैर-जीवाश्म स्रोतों (जिसमें परमाणु ऊर्जा भी शामिल है) से आता है। ग्रीन हाइड्रोजन के साथ-साथ परमाणु ऊर्जा परियोजनाएं भी तेजी से बढ़ाई जा रही हैं ताकि दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। अमेरिकी टैरिफ भारत के लिए तात्कालिक आर्थिक चुनौती जरूर हैं, लेकिन भारत अपने व्यापार और ऊर्जा नीतियों में बड़े स्तर पर बदलाव कर रहा है। ये प्रयास न केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हैं, बल्कि एक संतुलित और बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था की दिशा में भी योगदान देते हैं।

(लेखक विकास क्षेत्र से जुड़े एक समाजशास्त्री हैं।)

खास बात

इस्लाम सदा भारत में रहेगा, संघ का नया चेहरा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने संघ के 100 साल पूरे होने पर कहा है। जब से इस्लाम भारत में आया है। तभी से वह अस्तित्व में बना हुआ है। भारत से इस्लाम कहीं जाने वाला नहीं है। इसलिए मिलजुल कर रहना सीखो। संघ के 100 वर्ष पूरे होने के बाद संघ प्रमुख ने संघ का यह एक नया चेहरा भारत को दिखाया है।इसकी सर्वत्र चर्चा हो रही है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सलाहकार, भाजपा और आनुवंशिक संगठन स्वतंत्र

राजधानी दिल्ली में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 साल पूरे होने पर मोहन भागवत ने संबोधित करते हुए कहा,संघ एक वैचारिक एवं सांस्कृतिक संगठन है। वह सहयोगियों का मार्गदर्शन करता है। कोई भी सहयोगी संगठन उसके अधीन नहीं है। सभी अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्र हैं।समय-समय पर संघ सलाह जरूर देता है।माने या ना माने, इस पर संघ का कोई नियंत्रण नहीं है।काशी मथुरा के मामले में उन्होंने कहा कि यह संघ के एजेंडे में शामिल नहीं है। जो हिंदू हैं,वह काशी और मथुरा के एजेंडे में काम कर सकते हैं। यह कहकर संघ ने पल्ला भी झाड़ लिया। वहीं अनुवांशिक संगठनों को इशारा भी कर दिया,जो करना है, करो। संघ बोलेगा नहीं, इसी को मूक सहमति कहते हैं।

मोदी और जिनपिंग के बीच प्रेमालाप

पिछले 7 वर्षों से भारत और चीन के संबंधों में बर्फ जमी हुई थी। अब यह बर्फ पिघलना शुरू हो गई है। रिश्तो की गर्माहट ने बर्फ को तेजी के साथ पिघलाना शुरू कर दिया है।30 अगस्त को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चीन पहुंच रहे हैं। वहां पर चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग का प्रेमालॉप चीन और भारत के बीच नया इतिहास लिखने जा रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जब से मोदी के प्रति बेरुखी दिखा रहे है। उसके बाद से ही मोदी को नए फ्रेंड की तलाश थी।चीन के साथ मोदी प्रेम देखने लायक है। रिश्ते किस तरह से बदलते हैं, यह इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

ना-टायर्ड, ना रिटायर्ड, मोदी प्रधानमंत्री बने रहेंगे

देश की राजधानी दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और संघ प्रमुख मोहन भागवत के 75 साल की उम्र पूरी होने पर रिटायर करने की बात चल रही थी। संघ की धमकियों के आगे जब मोदी नहीं झुके। तब संघ प्रमुख को कहना पड़ा, ना टायर्ड ना रिटायर्ड। उन्होंने कहा कि वह भी 80 साल की उम्र तक काम करेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले ही कह चुके हैं।वह 75 साल की उम्र पूरा करने पर अपना पद नहीं छोड़ेंगे। सही है, समर्थ व्यक्ति के लिए कोई नियम कानून नहीं होते हैं। वह दूसरों के लिए नियम कानून बनाता है। संघ के 100 साल पूरे होने जा रहे हैं। इतना स्पष्ट हो गया है कि मोदी -भागवत अपना पद नहीं छोड़ेंगे।

राशिफल

शुभ संवत 2082, शाके 1947, सौम्य गोष्ठ, भादो शुक्ल पक्ष, वर्षा ऋतु, गुरु उदय पूर्वे शुक्रोदय पूर्वे तिथी, नवमी, सोमवासरे, ज्येष्ठा नक्षत्रे, विवयोगे, वालव करणे, वृश्चिक की चंद्रमा, रवियोग 30/56 महिष वाहन चंद्रनाड़ी, शनि खंड वृष्टि, मूल प्रारंभ दिन 3/49 उत्तर दिशा की यात्रा शुभ होगी।

आज जन्म लिए बालक का फल: आज जन्म लिया बालक योग्य, बुद्धिमान, चपल-चंचल, चतुर, स्वाभिमानी, कुशल वक्ता-अधिवक्ता, बैंक वैसशियर, लेखापाल, प्रबंधक, सुपरवाईजर, कम्प्यूटर इंजीनियर, कम्प्यूटर ऑपरेटर, कार्यवाहक होगा।

मेष राशि- कार्य कुशलता से संतोष, व्यवसायिक वृत्ति में सुधार तथा योजना फलीभूत अवश्य होगी।

वृष राशि- इष्ट मित्रों से लाभ, स्त्री वर्ग से मन प्रसन्न रहेगा, मनोवृत्ति संवेदनशील बनीं रहेगी।

मिथुन राशि- मनोबल उत्साह वर्धक होवे, कार्य कुशलता से संतोष तथा व्यवसाय गति उत्तम होगी।

कर्क राशि- प्रयत्नशीलता विफल हो, परिश्रम करने पर भी कुछ लाभ न मिले, बनते कार्य बिगड़े।

सिंह राशि- प्रयत्नशीलता विफल हो, परिश्रम करने पर भी कुछ लाभ होगा, कार्य गति में ध्यान दें।

कन्या राशि- यात्रा के प्रसंग से बचें, मानसिक बेचैनी, मित्रों के साथ यात्रा से हानि अवश्य होगी।

तुला राशि- समय अनुकूल नहीं विशेष कार्य स्थगित रखें, लेनदेन के मामले में हानि विवाद होगा।

**वृश्चिक रा

संक्षिप्त समाचार

गाम्बिया में प्रवासी नाव डूबने से 70 लोगों की दर्दनाक मौत

बेंजुल। पश्चिम अफ्रीका के तट पर एक बड़ा हादसा हुआ। गाम्बिया के विदेश मंत्रालय ने बताया कि एक प्रवासी नाव के पलट जाने से 70 लोगों की मौत हो गई। यह नाव गाम्बिया से रवाना हुई थी और इसमें मुख्य रूप से गाम्बिया और सेनेगल के नागरिक सवार थे। यह घटना मॉरिटानिया के तट के पास हुई। बता दें कि यूरोपीय संघ के आंकड़ों के मुताबिक पिछले साल 46,000 से ज्यादा अवैध प्रवासी इसी रास्ते से कैनरी द्वीप पहुंचे थे जबकि 10,000 से ज्यादा प्रवासियों की समुद्र में डूबकर मौत हो गई थी। गाम्बिया सरकार ने इस घटना के बाद अपने नागरिकों से अपील की है कि वे ऐसी जोखिम भरी यात्राओं से बचें जो लगातार लोगों की जान ले रही हैं। अधिकारियों के अनुसार नाव पर लगभग 150 लोग सवार थे जिनमें से केवल 16 लोगों को ही जीवित बचाया जा सका। यह हादसा अटलांटिक रूट पर हुआ जिसे दुनिया का सबसे खतरनाक प्रवासन मार्ग माना जाता है। इस रास्ते से हर साल हजारों लोग स्पेन के कैनरी द्वीपों तक पहुंचने की कोशिश करते हैं। इस बीच बीते 4 अगस्त को यमन के अदन की खाड़ी में एक और नाव हादसा हुआ था। इस हादसे में 54 लोगों की डूबकर मौत हो गई थी और 80 से अधिक लोग लापता हो गए थे। यह नाव 154 इथियोपियाई नागरिकों को लेकर बेहतर जीवन की तलाश में जा रही थी। संयुक्त राष्ट्र की माइग्रेशन एजेंसी ने बताया कि हादसे में 12 लोग ही बच पाए।

शाह पर अमर्यादित टिप्पणी मामले में टीएमसी सांसद महुआ पर रायपुर में एफआईआर

रायपुर। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी करने को लेकर पश्चिम बंगाल की तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की सांसद महुआ मोइत्रा के खिलाफ छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में एफआईआर दर्ज की गई है। सांसद ने यह बयान बीते दनिों पश्चिम बंगाल के नदिया जिले में आयोजित एक कार्यक्रम में दिया था। मोहबा बाजार, कोटा निवासी गोपाल सामंतो ने शनविार को माना रायपुर पुलिस में टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा के खिलाफ शिकायत दर्ज कराया था। पुलिस अधीक्षक के नाम से दी गई शिकायत में कहा कि, सांसद महुआ मोइत्रा ने देश के गृह मंत्री अमित शाह का गला काटकर मेज पर रखने की बात को सुनने के बाद से न केवल आहत हूं, बल्कि भयभीत और आतंकित भी हूं, यह पहला मौका है जब एक सांसद ने देश के गृह मंत्री के खिलाफ ऐसा बयान दिया हो। यह एक चेतावनी है उन सभी शांतिप्रिय नागरिकों के लिए कि जो भी बांग्लादेशी घुसपैठ की बात करेगा उसको अपनी प्राण की कीमत चुकानी पड़ेगी।

नई पीढ़ी के अत्याधुनिक युद्धक विमान बनाएगा अडानी समूह

कानपुर। अडानी समूह ने आपरेशन सिन्दूर में ड्रोन एवं अन्य रक्षा उपकरणों की गुणवत्ता साबित होने के बाद देश में पांचवीं पीढ़ी के अत्याधुनिक युद्धक विमान (एमका) के विकास के लिए भी दिलचस्पी जाहिर की है। करीब आठ साल पहले रक्षा उत्पादन क्षेत्र में कदम रखने वाले अडानी डिफेंस एंड एयरोस्पेस ने छोटे हथियारों और कारतूस बनाने में तो वैश्विक मानकों के अनुरूप दर्जा प्राप्त किया ही है, साथ ही ड्रोन, मानव रहित युद्धक विमान, ड्रोन रोधी प्रतिरक्षा कवच तैयार करने में साख बनाई है। कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी आशीष राजवंशी ने यहां पत्रकारों से बातचीत में बताया कि देश में अगली पीढ़ी के मध्यम श्रेणी के उन्नत युद्धक विमान बनाने के लिए रक्षा मंत्रालय ने अभिरुचि पत्र आमंत्रित किये हैं जिसकी अंतिम तिथि 30 सितंबर है। हिन्दुस्तान एयरोनॉटिकल्स लिमिटेड, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड और टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स के साथ ही अडानी डिफेंस एंड एयरोस्पेस ने भी अभिरुचि जाहिर की है। उन्होंने कहा, देखिए, सरकार किसको मौका देती है।

पवित्र रिश्ता की अभिनेत्री प्रिया मराठे का निधन

मुंबई। मनोरंजन जगत से एक बेहद दुखद खबर सामने आई है। छोटे पर्दे की जानी-मानी और प्रतिभाशाली अभिनेत्री प्रिया मराठे अब हमारे बीच नहीं रहीं। 31 अगस्त को महज 38 वर्ष की आयु में उन्होंने मुंबई के मीरा रोड स्थित अपने आवास पर अंतिम सांस ली। प्रिया मराठे लंबे समय से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रही थीं। बीते कुछ महीनों से उनकी तबीयत बिगड़ती चली गई। हाल ही में उन्हें मुंबई के एक निजी अस्पताल में भर्ती भी कराया गया था। तमाम कोशिशों के बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका और आखिरकार उन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया। उनके निधन की खबर ने पूरे टीवी इंडस्ट्री और उनके चाहने वालों को गहरे सदमे में डाल दिया है। प्रिया मराठे ने अपने करियर की शुरुआत मराठी टीवी शो चार दिवस सासुचे से की थी, जिसमें उनकी अभिनय प्रतिभा ने लोगों का ध्यान खींचा। इसके बाद वह एकता कपूर की मशहूर धारावाहिक कसम से का हिस्सा बनीं, जिसमें उनके काम की काफी प्रशंसा हुई। लेकिन दर्शकों के बीच असली पहचान उन्हें अंकिता लोखंडे के लोकप्रिय शो पवित्र रिश्ता से मिली। इस धारावाहिक में उनके निभाए किरदार ने उन्हें घर-घर तक पहुंचा दिया।

भारत-चीन सीमा के ज्योतिर्मठ-मलारी मार्ग पर पुल बहा, कई गांवों का संपर्क कटा

देहरादून। चमोली के सीमांत क्षेत्र को जोड़ने वाले ज्योतिर्मठ-मलारी मार्ग पर तमक नाला पर बना पुल बहने से मार्ग पूरी तरह अवरूद्ध हो गया है। सीमा सड़क संगठन मार्ग पर आवाजाही शुरू करने में जुटा है। चारधाम के मार्ग अभी बंद हैं। इसके मौसम विभाग ने प्रदेश के 8 जिलों में बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है।

भारत की एजुकेट गर्ल्स संस्था रेमन मैग्सेसे अवॉर्ड 2025 से सम्मानित

नई दिल्ली ■ एजेंसी

भारत की प्रमुख सामाजिक संस्था एजुकेट गर्ल्स को 2025 के रेमन मैग्सेसे अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। इसकी घोषणा रविवार को की गई है। यह सम्मान 7 नवंबर 2025 को फिलीपींस की राजधानी मनीला के मेट्रोपॉलिटन थिएटर में आयोजित 67वीं रेमन मैग्सेसे अवॉर्ड सेरेमनी में औपचारिक रूप से दिया जाएगा।

एजुकेट गर्ल्स की संस्थापक सफीना हुसैन ने कहा ने रविवार को बताया कि यह पुरस्कार एजुकेट गर्ल्स को बालिकाओं और युवतियों की शिक्षा के समाज की अतार्किक सांस्कृतिक धारणाओं को चुनौती देने, उन्हें निरक्षरता से मुक्त करने और उन्हें कौशल, हिम्मत और आत्मनिर्भरता देने के लिए दिया गया है। उन्होंने कहा कि एजुकेट गर्ल्स संस्था अब उस गौरवशाली पंक्ति का हिस्सा बन चुकी है, जिसमें सत्यजीत रे, एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी, किरण बेदी,

विनोबा भावे, दलाई लामा, मदर टेरेसा और ऑस्कर विजेता हायाओ मियाजाकी जैसी विश्वप्रसिद्ध विभूतियां शामिल हैं। सफीना हुसैन ने कहा कि यह उपलब्धि हमारी टीम, बालिका स्वयंसेवकों, पार्टनर्स, समर्थकों और सबसे बढ़कर उन बच्चियों के नाम है, जिन्होंने अपनी सबसे बड़ी ताकत, शिक्षा को फिर से हासिल किया। आने वाले दस वर्षों में एजुकेट गर्ल्स एक करोड़ से भी ज्यादा शिक्षार्थियों तक पहुंचने का लक्ष्य रखता है। भारत के इस मॉडल को अब दुनिया के अन्य हिस्सों में भी साझा करने की योजना है, ताकि हर बच्ची को उसका शिक्षा के हक दे सके। हमें पूरा यकीन है कि जब एक लड़की पढ़ती है, तो उसका असर सिर्फ उसकी जिंदगी तक सीमित नहीं रहता, वह अपने साथ पूरे समाज को आगे बढ़ाती है। एजुकेट गर्ल्स की सीईओ गायत्री नायर लोबो ने कहा कि हमारे लिए शिक्षा सिर्फ विकास का साधन नहीं, बल्कि हर लड़की का बुनियादी अधिकार है। यह सम्मान इस बात का प्रमाण है कि जब सरकार, कॉरपोरेट, डोनर्स और समुदाय मिलकर काम करते हैं, तो गहरी सामाजिक और संरचनात्मक चुनौतियों को बदला जा सकता है। हम भारत सरकार के प्रयासों और सहयोग के लिए आभारी हैं, जिन्होंने इस मिशन को संभव बनाया। साथ ही, मालदीव की शाहिना अली और फिलीपींस के फादर फ्लावियानो विलनुएवा को भी हार्दिक बधाई, जिनके काम ने हम सभी को प्रेरित किया है।

हिमाचल प्रदेश लगातार हो रही बारिश से जन-जीवन अस्त-व्यस्त

2 सितंबर तक भारी बारिश का रेड अलर्ट चार हाइवे सहित सैंकड़ों सड़कें बंद

शिमला ■ एजेंसी

हिमाचल प्रदेश में मानसून लगातार सक्रिय बना हुआ है और अगले दो दिनों तक कई जिलों में भारी से बहुत भारी बारिश का दौर जारी रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञान केंद्र शिमला ने राज्य के अधिकांश जिलों के लिए चेतावनी जारी की है। कई जिलों में रेड अलर्ट जारी किया गया है और लोगों को विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी गई है। विभाग ने साफ कहा है कि रेड अलर्ट वाले जिलों में लोग बिना जरूरत घर से बाहर न निकलें, नदियों-नालों और भूस्खलन संभावित स्थानों से दूरी बनाए रखें तथा अनावश्यक यात्रा से बचें। राज्य भर में भूस्खलन से 4 नेशनल हाइवे व 662 सड़कों पर आवागमन ठप हो गया है।

मौसम विभाग के अनुसार, एक सितंबर को ऊना, बिलासपुर, हमीरपुर, कांगड़ा, मंडी और सिरमौर जिलों में बहुत भारी वर्षा का रेड अलर्ट रहेगा। इन जिलों में बेहद सतर्क रहने की जरूरत है। शिमला, कुल्लु, चम्बा, किन्नौर और लाहौल-स्पीति में इस दिन भारी वर्षा का ऑरेंज अलर्ट रहेगा।

दो सितंबर को चंबा, कांगड़ा, कुल्लू और मंडी जिलों में फिर से रेड अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग ने साफ कहा है कि यहां अत्यधिक भारी वर्षा से भूस्खलन और नदियों में अचानक जलस्तर बढ़ने का खतरा है। इस दिन शेष अधिकांश जिलों में ऑरेंज अलर्ट जारी रहेगा। तीन सितंबर को शिमला और सिरमौर में येलो अलर्ट रहेगा जबकि बाकी जिलों में मौसम सामान्य रहने की संभावना है। चार से छह सितंबर तक भी पूरे प्रदेश में मौसम साफ रहने का अनुमान है और किसी भी जिले के लिए कोई अलर्ट नहीं दिया गया है।

मौसम विभाग ने कहा है कि इन दो दिनों के दौरान पहाड़ी जिलों में भूस्खलन, सड़कें बंद होने और यातायात प्रभावित होने जैसी समस्याएं आ सकती हैं। निचले जिलों में अचानक बाढ़ और जलभराव की स्थिति भी बन सकती है। इसलिए लोग सतर्क रहें, मौसम की जानकारी पर नजर बनाए रखें और सुरक्षित स्थानों पर ही ठहरें।

इस बीच लगातार हो रही भारी बारिश ने पूरे प्रदेश में जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित कर दिया है। रविवार दिन भर राजधानी शिमला सहित कई जिलों में जोरदार वर्षा हुई, जिससे जगह-जगह भूस्खलन हुआ। सिरमौर जिला में सोमवार 1 सितंबर को सभी शिक्षण संस्थानों में अवकाश घोषित किया गया है।

राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र के अनुसार प्रदेश में अब तक चार नेशनल हाईवे और 662 सड़कें बंद हो चुकी हैं। अकेले चंबा में 253, मंडी में 203, कुल्लू में 175, कांगड़ा में 61, शिमला में 69, सोलन में 30 और ऊना में 22 सड़कें बंद हैं। कुल्लू के दो और मंडी व सिरमौर के एक-एक नेशनल हाईवे पूरी तरह ठप हैं।

भारी बारिश के चलते बिजली और पानी की आपूर्ति पर भी गहरा असर पड़ा है। प्रदेश में 985 ट्रांसफार्मर और 495 पेयजल योजनाएं ठप पड़ी हैं। कुल्लू में 332, चंबा में 296 और मंडी में 173 ट्रांसफार्मर बंद हैं, जबकि कांगड़ा, मंडी, शिमला और अन्य जिलों में पेयजल योजनाएं प्रभावित हुई हैं। मौसम विभाग के अनुसार बीते 24 घंटों में बिलासपुर जिले मलरान में 90 मिलीमीटर, नैना देवी में 82 मिलीमीटर और भटियात में 75 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई।

आपातकालीन परिचालन केंद्र की रिपोर्ट के मुताबिक इस मानसून सीजन में अब तक 320 लोगों की मौत हो चुकी है। मंडी में 51, कांगड़ा में 49 और चंबा में 36 लोगों की जान गई है। अब तक 4,098 घर क्षतिग्रस्त हो चुके हैं, जिनमें से 844 पूरी तरह ढह गए हैं।

पंजाब के 1312 गांव बाढ़ की चपेट में, अब तक 14936 को सुरक्षित निकाला

चंडीगढ़। पंजाब के राजस्व, पुनर्वास एवं आपदा प्रबंधन मंत्री हरदीप सिंह मुंडियां ने रविवार की शाम को कहा है कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों से अब तक कुल 14936 लोगों को निकालकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि सरकार की पूरी मशीनरी, एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, सेना और पंजाब पुलिस के जवान बाढ़ में लोगों की जान-माल की सुरक्षा के लिए दिन-रात डटे हुए हैं। उन्होंने बताया कि जिला अमृतसर से 1700, बरनाला से 25, फाजिल्का से 1599, फिरोजपुर से 3265, गुरदासपुर से 5456, होशियारपुर से 1052, कपूरथला से 362, मानसा से 163, मोगा से 115, पठानकोट से 1139 और जिला तरन तारन से अब तक 60 व्यक्तियों को बाढ़ के पानी से सुरक्षित निकाला गया है। मुंडियां ने कहा कि जैसे-जैसे निकाले गए लोगों की संख्या बढ़ रही है, उसी अनुसार राहत शिविरों की संख्या भी बढ़ाई गई है। इस समय राज्य के बाढ़ प्रभावित इलाकों में 122 राहत शिविर चल रहे हैं, जिनमें 6582 व्यक्तियों को ठहराया गया है।

रावी, सतलुज और चिनाब नदियों में बाढ़ से पाकिस्तान में हालात बेकाबू, लाहौर तक पहुंचा पानी

इस्लामाबाद ■ एजेंसी

पाकिस्तान में तीन नदियों की बाढ़ ने हालात बेकाबू कर दिए है। बाढ का पानी लाहौर तक पहुंच गया है। रिपोर्ट के अनुसार मूसलधार बारिश से आए फ्लैश फ्लड और शहरी इलाकों में जलजमाव से 28 और लोगों की मौत हो गई। पंजाब प्रांतीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (पीडीएमए) के आंकड़ों के अनुसार, सतलुज, रावी और चिनाब नदियों में आई बाढ़ से अब तक 1,769 मौजों के 14.6 लाख से ज्यादा लोग प्रभावित हुए हैं। पीएमडीए ने ओकारा और साहीवाल जिलों में भी खतरे की चेतावनी दी है।

प्राधिकरण ने कहा कि रावी नदी का बढ़ता जलस्तर अगले 36 घंटों में सदानी इलाके को डुबो सकता है। चेतावनी में कहा गया, जब बल्लोकी में पानी का स्तर ऊंचा होगा तो नाले के तटबंध पर खतरा बढ़ जाएगा। सूत्रों के अनुसार, अधिकारियों ने कसूर शहर को बचाने के लिए जानबूझकर आरआरए-1 तटबंध तोड़ दिया, क्योंकि सतलुज नदी का जलस्तर 1955 के बाद पहली बार रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। शुक्रवार को बाढ़ का पानी देश के दूसरे सबसे बड़े शहर लाहौर तक पहुंच गया और प्रमुख कस्बे झंग को डूबोने की आशंका जताई गई। यह इलाका लगभग 40 साल में सबसे भयानक बाढ़ से जूझ रहा है। मौसम विभाग (पीएमडी) ने चेतावनी दी है कि पंजाब, खैबर पख्तूनख्वा (केपी), पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर, इस्लामाबाद और पोटोहार क्षेत्र समेत कई इलाकों में तेज बारिश, आंधी और तूफान आ सकते हैं। इससे फ्लैश फ्लड, शहरी बाढ़ और भूस्खलन की आशंका जताई गई है। वहीं, उत्तर-पूर्वी बलूचिस्तान, दक्षिण-पूर्वी सिंध और पाकिस्तान अधिकृत गिलगित-बाल्टिस्तान में भी शाम तक भारी बारिश की संभावना है। पीएमडी ने कहा कि उत्तरी केपी, मुर्री, गल्लियत, रावलपिंडी, इस्लामाबाद और उत्तर-पूर्वी पंजाब में नालों और धाराओं में बाढ़ आ सकती है। इसके अलावा, लाहौर, गुजरांवाला और सियालकोट जैसे निचले इलाकों में शहरी बाढ़ का खतरा है।

पुतिन ने बढ़ाई अमेरिका की टेंशन कहा- टैरिफ ही नहीं कई समस्याओं का समाधान रखता है ब्रिक्स

बीजिंग ■ एजेंसी

टैरिफ के नाम पर समूची दुनिया से संबंध खराब कर रहा अमेरिका की अब फजीहत होना शुरु हो गई है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने साफ कह दिया कि भारत पर लगाया गया टैरिफ मनमाना कदम है। चीन में होने वाले एससीओ शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने तियानजिन पुतिन ने कहा कि चीन और रूस मिलकर ब्रिक्स को मजबूत बनाने और दुनिया के सामने 'नए विकल्प' पेश करने के लिए काम कर रहे हैं।

चीन के सरकारी मीडिया को दिए इंटरव्यू में पुतिन ने कहा दोनों देश भेदभावपूर्ण प्रतिबंधों के खिलाफ हैं। उनका यह निशाना सीधे तौर पर अमेरिकी टैरिफ पर है। उन्होंने कहा कि ये कदम सदस्य देशों और वैश्विक समुदाय के सामाजिक-आर्थिक विकास को रोक रहे हैं। यह बयान ऐसे वक्त आया है जब पुतिन चीन के तियानजिन शहर में होने वाले शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने पहुंचे हैं। 31

अगस्त से 1 सितंबर तक चलने वाले इस सम्मेलन के दौरान उनकी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से द्विपक्षीय मुलाकात भी तय मानी जा रही है। पुतिन ने कहा, 'हम चीन के साथ मिलकर ब्रिक्स को वैश्विक ढांचे का अहम स्तंभ बना रहे हैं। हमारा मकसद है कि सदस्य देशों के लिए आर्थिक अवसर बढ़ें और रणनीतिक क्षेत्रों में साझेदारी के लिए साझा प्लेटफॉर्म तैयार किए जाएं।' उन्होंने यह भी जोड़ा कि ब्रिक्स अब सिर्फ एक संगठन नहीं बल्कि 'वैश्विक चुनौतियों का हल निकालने वाला मंच' बनता जा रहा है, जहां सदस्य देश सुरक्षा और आर्थिक विकास पर एक जैसी राय रखते हैं। रूसी राष्ट्रपति ने इंटरव्यू में अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा, आईएमएफ और वर्ल्ड बैंक में सुधार जरूरी है। हमें एक ऐसे नए वित्तीय सिस्टम की जरूरत है जो सच्ची समानता पर आधारित हो और सभी देशों को बराबरी का मौका दे। वित्त को औपनिवेशिक हथियार की तरह इस्तेमाल करना अब खत्म होना चाहिए।' दरअसल आईएमएफ और वर्ल्ड बैंक अमेरिका के नेतृत्व वाले पश्चिमी देशों की ओर से कंट्रोल होते हैं। इनमें बदलाव अमेरिका के लिए टेंशन वाली बात है। पुतिन ने कहा कि ब्रिक्स की सोच 'ग्लोबल मेजॉरिटी' यानी ग्लोबल साउथ के देशों के हितों के लिए है और इसी वजह से यह समूह लगातार लोकप्रिय होता जा रहा है। जी-20 में चीन की भूमिका की तारीफ पुतिन ने जी20 में चीन की भूमिका की भी तारीफ की। उन्होंने कहा कि रूस और चीन ने मिलकर जी20 का एजेंडा बदलने की दिशा में काम किया है, ताकि यह 'ग्लोबल साउथ' की प्राथमिकताओं को प्रतिबिंबित करे।

इजरायल ने समीक्षा बैठक पर किया हवाई हमला हूती प्रधानमंत्री की मौत

गाजा ■ एजेंसी

इजरायल के हवाई हमलें में हूती प्रधानमंत्री की मौत हो गई। ये हमला उस वक्त हुआ जब प्रधानमंत्री एक समीक्षा बैठक कर रहे थे। ईरानी समर्थित हूती विद्रोही समूह बयान जारी करते हुए बताया कि गुरुवार को हुए एक हवाई हमले में प्रधानमंत्री अल-रहवी और कई अन्य मंत्री मारे गए। समूह के मुताबिक, यह हमला उस समय हुआ जब सरकार के अधिकारी एक कार्यशाला में भाग ले रहे थे, जिसमें पिछले एक साल में सरकार के प्रदर्शन की समीक्षा की जा रही थी। अल-रहवी अगस्त 2024 से हूती नेतृत्व वाली सरकार के प्रधानमंत्री के रूप में कार्यरत थे। बता दें कि इस साल मई में, संयुक्त राज्य अमेरिका ने हूतियों के साथ एक समझौता किया था, जिसमें कहा गया था कि अगर हूती लाल सागर में जहाजों को निशाना बनाना बंद कर देंगे, तो इज़राइल हवाई हमले रोकेगा। हालांकि, हूतियों ने कहा है कि यह समझौता उन्हें

उन ठिकानों को निशाना बनाने से नहीं रोकता, जिन्हें वे इज़राइल से जुड़ा मानते हैं।

इज़राइली सेना ने हमले की पुष्टि करते हुए कहा कि उसने सना क्षेत्र में हूती आतंकवादी शासन के एक सैन्य ठिकाने को सटीक निशाना बनाकर हमला किया। गाज़ा में चल रहे युद्ध के दौरान, हूती समूह ने इज़राइल के खिलाफ मुखर समर्थन दिखाया है और कई मिसाइलों और ड्रोन के माध्यम से इज़राइल पर हमले किए हैं। हूतियों का कहना है कि ये हमले फ़िलिस्तीनियों के साथ एकजुटता में किए गए हैं। हालांकि, अधिकांश मिसाइलों को इज़राइली रक्षा प्रणालियों ने नष्ट कर दिया, लेकिन हूतियों ने अपने हमले जारी रखे। इस सप्ताह की शुरुआत में, हूती-नियंत्रित स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी आँकड़ों के अनुसार, इज़राइली हवाई हमलों में सना में कई स्थानों पर हमला हुआ, जिसमें 10 लोगों की मौत और 100 से ज्यादा लोग घायल हो गए।

तीन दिवसीय घोष शिविर का वैश्य कॉलेज में हुआ सफल समापन, 400 सेवकों ने सीखी अनुशासन और राष्ट्रभक्ति की साधना

संघ में घोष केवल वादन या मनोरंजन नहीं है, बल्कि यह एक साधना है : आलोक कुमार

संघ से स्वयंसेवकों में होता है राष्ट्रीय एकता, अनुशासन व चरित्र का निर्माण: संदीप चौधरी

चंडीगढ़ ■ एजेंसी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तीन दिवसीय हरिनाद घोषवर्ग का रविवार को रोहतक के वैश्य कॉलेज में समापन हुआ। शिविर में 400 स्वयंसेवकों ने घोष साधना के माध्यम से अनुशासन, एकता और राष्ट्रभक्ति का प्रशिक्षण लिया। सह सरकार्यवाह आलोक कुमार और सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर संदीप चौधरी मुख्य वक्ता और मुख्यातिथि के रूप में शामिल हुए।

संघ के सह सरकार्यवाह आलोक कुमार ने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा कि संघ में घोष केवल वादन या मनोरंजन नहीं है, बल्कि यह एक साधना है, जो मनुष्य को अनुशासन, समन्वय और राष्ट्रहित से जोड़ती है। उन्होंने वेद मंत्र सङ्गच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे, संज्ञानाना उपासते।। का उल्लेख करते हुए कहा कि जब सभी मिलकर एक साथ चलते हैं तो केवल कदम ही नहीं, बल्कि मन भी एक हो जाते हैं। यही घोष साधना का उद्देश्य है- राष्ट्र को एक दिशा में, एक मन होकर आगे बढ़ाना। आलोक कुमार ने कहा कि घोष केवल संगीत का माध्यम नहीं, बल्कि यह वीरता, पराक्रम और राष्ट्रनिर्माण की भावना का प्रतीक है।

उन्होंने बताया कि शंख, ढोल और रणभेरी जैसे वाद्ययंत्र प्राचीन काल से ही ऊर्जा, उत्साह और विजय के संदेशवाहक रहे हैं। युद्धभूमि में भी ये रणवाद्य वीरता और उमंग का संचार करते थे। संघ का घोष दल उसी गौरवशाली परंपरा को आज के समाज तक पहुंचा रहा है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि समय के साथ विदेशी ब्रास बैंड का प्रचलन बढ़ा, लेकिन संघ के घोष में जो धुनें बजाई जाती हैं, वे भारतीय रागों पर आधारित होती हैं। यहां तक कि विदेशी धुनों को भी भारतीय स्वरूप में ढालकर उन्हें हमारी सांस्कृतिक परंपरा के अनुरूप प्रस्तुत किया जाता है। मुख्य अतिथि ब्रिगेडियर संदीप चौधरी घोष प्रदर्शन देखकर अभिभूत हुए और उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि मैं स्वयंसेवकों के इस प्रदर्शन को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। 100 साल से मेरे परिवार की तीन पीढ़ियां फौज के माध्यम से देश सेवा कर रही हैं।

देहरादून। उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले के ब्लॉक धारचूला के ऐलागाड पर निमार्णाधीन भूमिगत एनएचपीसी पावर हाउस की टनल के मुहाने पर भूस्खलन का मलबा आने से 19 श्रमिक सुरंग में फंसे गए। इनमे से आठ श्रमिकों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया है, जबकि 11 श्रमिक अभी भी सुरंग के भीतर फंसे हैं। प्रशासन सभी को शीघ्र ही सुरक्षित निकाल लिया जाएगा।

बच्चों को पढ़ाने के लिए अपनाएं ये 5 खास तरीके, जानें कैसे आने लगेंगे अच्छे मार्क्स

बच्चे को पढ़-लिखकर जीवन में आगे बढ़ते देखने का सपना हर माता-पिता का होता है। लेकिन कई बार पेरेंटिंग से जुड़ी कुछ लापरवाहियों की वजह से ये सपना हकीकत बनने से पीछे रह जाता है। अगर लाख कोशिशों के बावजूद आपका बच्चा पढ़ने में कमजोर हैं या उसे पढ़ा हुआ याद नहीं रहता, जिससे कक्षा में उसके अंक साथी बच्चों से हमेशा कम रह जाते हैं तो घर पर बच्चों को पढ़ाने के ये 5 खास तरीके आपकी परेशानी को दूर करने में आपकी मदद कर सकते हैं। आइए जानते हैं बच्चों को पढ़ाते समय किन खास बातों का ध्यान रखना चाहिए।

पढ़ने का समय और जगह रखें फिक्स

अगर आप चाहते हैं कि आपका बच्चा पूरे फोकस के साथ मन लगाकर पढ़ने के लिए बैठे तो सबसे पहले उसके लिए पढ़ने का एक निश्चित समय और जगह तय कर लें। रोजाना एक समय और जगह पर पढ़ाई करने से बच्चे के दिमाग को यह मैसेज जाता है कि उसे इसी समय पर रोजाना पढ़ने के लिए बैठना है।

छोटे-छोटे ब्रेक हैं जरूरी

कई पेरेंट्स बच्चों को लगातार घंटों तक एक जगह बैठकर पढ़ने के लिए प्रेशर बनाते रहते हैं, ऐसी गलती ना करें। आपको यह समझना जरूरी है कि लगातार कई घंटे बैठकर पढ़ना बच्चों के लिए मुश्किल हो सकता है। बच्चों का अटेंशन स्पैन उम्र के साथ बढ़ता है। ऐसे में पढ़ाई के बीच बच्चों को छोटे-छोटे ब्रेक जरूर लेने दें।

स्कूल में हुआ काम घर पर दोहराएं

एक्सपर्ट की मानें तो जो बच्चे स्कूल में पढ़ाई गई चीजों को घर आकर वापस दोहराते हैं, उन्हें परीक्षा के समय पाठ याद करने में अधिक परेशानी और समय नहीं लगता है। जिससे उसे परीक्षा में अच्छे नंबर लाने में मदद मिलती है।

बच्चे के लिए मोटिवेशन भी है जरूरी

अगर आपका बच्चा कुछ अच्छा करता है तो उसकी प्रशंसा या उसे मोटिवेट जरूर करें। बच्चे की सराहना करने से उसका आत्मविश्वास बढ़ता है, जिससे उसकी परफॉर्मेंस और ज्यादा बेहतर बनती है।

वीकेंड्स पर लें टेस्ट

परीक्षा के लिए बच्चे को अच्छी तरह तैयार करने के लिए हर हफ्ते किसी भी एक दिन उसका टेस्ट जरूर लें। बच्चे ने पूरे हफ्ते जो कुछ पढ़ा है उसका टेस्ट लेने से बच्चे की प्रैक्टिस अच्छी हो जाती है, जिससे वह परीक्षा में अच्छे मार्क्स ला सकता है।

एक उम्र के बाद पिता से क्यों दूर होने लगते हैं बच्चे?

अक्सर देखा जाता है कि 12-13 साल के बाद बच्चे अपने पिता से दूरी बनाने लगते हैं। पेरेंटिंग कोच पुष्पा शर्मा का कहना है कि इसके पीछे एक ही कारण नहीं होता, बल्कि कई छोटी-छोटी बातें मिलकर पिता और बच्चे के बीच की दूरी को जन्म देती हैं।

किशोरावस्था वह दौर है जब बच्चा ना तो पूरी तरह छोटा रहता है, ना ही पूरी तरह बड़ा बन पाता है। यह समय उसके लिए खुद को पहचानने, अपनी सोच बनाने और दुनिया को अपने नजरिए से देखने का होता है। इस उम्र में बच्चे ज्यादा सेंसिटिव होते हैं और अपने आस-पास के रिश्तों को गहराई से महसूस करते हैं। खासकर पिता के साथ उनका रिश्ता इस समय बड़ी तेजी से बदल सकता है। कई बार ये बदलाव पॉजिटिव भी होता है, लेकिन अक्सर देखा जाता है कि 12-13 साल के बाद बच्चे अपने पिता से दूरी बनाने लगते हैं। पेरेंटिंग कोच पुष्पा शर्मा का कहना है कि इसके पीछे एक ही कारण नहीं होता, बल्कि कई छोटी-छोटी बातें मिलकर पिता और बच्चे के बीच की दूरी को जन्म देती हैं। चलिए जानते हैं ये बातें क्या हैं-

मौजूद रहना ही काफी नहीं

अक्सर कई फादर्स को ये लगता है कि अगर वे घर में हैं, तो अपने बच्चे के पास ही हैं। लेकिन घर में मौजूद रहने और वास्तव में बच्चे के पास होने में फर्क है। अगर पिता घर पर होते हुए भी अपना ज्यादातर समय किसी कोने में, टीवी या फोन में बिताते हैं, तो बच्चा ये महसूस कर लेता है कि उसकी जिंदगी में उनका इमोशनल कनेक्शन कमजोर है। बच्चों को परफेक्ट पिता की नहीं, बल्कि एक ऐसे इंसान की जरूरत होती है जो उनके साथ समय बिताए, उनकी बातें सुनें और उनकी छोटी-छोटी खुशियों में शामिल हो।

सिर्फ नियम नहीं, भरोसा भी जरूरी

लड़के अक्सर अपनी ताकत और क्षमता को परखना चाहते हैं, जबकि लड़कियां यह जानना चाहती हैं कि वे कितनी अहम हैं। अगर पिता का रिश्ता बच्चों से सिर्फ नियम लागू करने और डांटने तक सीमित रह जाए, तो भरोसा और अपनापन खत्म होने लगता है। इस स्थिति में बच्चे अपनी बात शेयर करना छोड़ देते हैं और दोस्तों या सोशल मीडिया में वो अटेंशन या वैलिडेशन खोजने लगते हैं जो उन्हें घर में नहीं मिल रही होती।

ग्रेड से ज्यादा जरूरी है बच्चे को समझना

पुष्पा शर्मा के अनुसार, बच्चों से अक्सर यह सुनने को मिलता है कि पापा को सिर्फ ग्रेड और रूल्स की परवाह थी। यह सोच इस वजह से बनती है क्योंकि कुछ पिता बच्चों को इंसान के रूप में देखने से ज्यादा उन्हें एक प्रोजेक्ट की तरह ट्रीट करते हैं, जहां सिर्फ बच्चे का रिजल्ट और डिसिप्लिन मायने रखता है। अगर आप चाहते हैं कि आपका बच्चा आपके करीब रहे, तो उसे कंट्रोल करने के बजाय उसके इमोशंस को समझें और पेशेंस के साथ पेरेंटिंग करें।

इंतजार हमेशा काम नहीं आता

कुछ पिता सोचते हैं कि अभी सख्त रहेंगे और बच्चे बड़े हो जाने पर उनसे दोस्ती कर लेंगे। लेकिन हकीकत यह है कि बच्चे इतने लंबे समय तक इंतजार नहीं करते। अगर 12 साल तक आपने उनसे जुड़ाव नहीं बनाया, तो हाई स्कूल या कॉलेज के समय अचानक से करीब आना मुश्किल हो जाता है। तब तक वे यह तय कर चुके होते हैं कि कौन उनकी सुनता है और कौन नहीं, कौन उन्हें सुरक्षित महसूस कराता है और कौन नहीं। पेरेंटिंग कोच के मुताबिक इस एज आते-आते धीरे-धीरे पिता और बच्चे के बीच में एक दूरी मेंटेन हो जाती है, जिसे काम करना बेहद मुश्किल हो जाता है।

बच्चे को सुबह स्कूल जाने के पहले ब्रेकफास्ट में क्या खिलाएं, क्या कहते हैं बच्चों के डॉक्टर

बच्चे स्कूल जाते वक्त अक्सर ब्रेकफास्ट ना करने की जिद करते हैं। वहीं पैरेंट्स लेकर ग्रैंड पैरेंट्स तक बच्चों को जबरदस्ती कुछ ना कुछ खिला देते हैं। अगर बच्चा हेल्दी ब्रेकफास्ट नहीं खा रहा तो चिप्स, चॉकलेट जैसी चीजों को ही खाने देते हैं। उनका कहना होता है कि बच्चा खाली पेट स्कूल ना जाए। लेकिन क्या ये सही है? इस बारे में बच्चों के डॉक्टर और एक्सपर्ट की राय अलग रहती है। जानें बच्चों को सुबह-सुबह स्कूल जाने के पहले क्या खिलाना चाहिए।

बच्चों को कुछ भी ना खिलाएं

इंस्टाग्राम पर पीडियाट्रिशन डॉक्टर राहुल ने सलाह दी है कि सुबह-सुबह बच्चों को क्या खिलाकर स्कूल भेजना चाहिए। उनका कहना है कि बच्चों को सुबह स्कूल जाने के पहले कुछ भी नहीं खाने को देना चाहिए। ज्यादातर बच्चे सुबह खाना नहीं चाहते। दरअसल, बच्चों को सुबह सोकर उठने के दो घंटे तक भूख नहीं लगती। ऐसे में उसे जबरदस्ती कुछ भी ना खिलाएं। अगर बच्चा खाने के लिए मांग रहा तो जरूर खिलाएं लेकिन बच्चा नहीं खाना चाहता तो फोर्सफुली ना खिलाएं। हो सकता है बच्चा रास्ते में या बस में उल्टी कर दे। या उसका मन खराब होने लगे।

बच्चे को टिफिन में दें ये चीजें

बच्चे के टिफिन में सब्जी और रोटी रखने के साथ ही दो तरीके फल दें। जिससे बच्चे को जब भी भूख लगे वो फ्रूट को खा लें। कई बार बच्चे को रास्ते में भूख लगती या स्कूल पहुंचकर भूख लगती है तो वो फ्रूट आसानी से खा लेगा। लेकिन ब्रेकफास्ट में जबरदस्ती कुछ ना खिलाएं। बच्चे के बैग में खाने की चीजों को रख दें। जब उसको भूख लगेगी वो खुद से खा लेगा।

इन खाने की चीजों को बिल्कुल ना दें

बच्चे को सुबह स्कूल जाने के पहले दूध, ब्रेड, चाय, टोस्ट, बिस्कुट, ड्राई फ्रूट्स, चिप्स जैसी चीजों को खाने के लिए जबरदस्ती बिल्कुल ना दें।

न्यूबॉर्न बेबी के सामने क्यों नहीं लगाना चाहिए परफ्यूम

ज्यादातर लोग अपने शरीर की गंध से छुटकारा पाने और हमेशा महकता रहने के लिए परफ्यूम या फिर डियोड्रेंट का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन क्या आप इसे अपने न्यूबॉर्न बेबी के सामने भी लगाकर चले जाते हैं? अगर हां तो जानिए आपको ऐसा करने से क्यों बचना चाहिए।

खुशबूदार रहने के लिए और शरीर की गंध से छुटकारा पाने के लिए ज्यादातर लोग परफ्यूम या फिर डियोड्रेंट का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन क्या आप अपने न्यूबॉर्न बेबी के सामने भी इसे लगाकर जाते हैं? अगर हां, तो आपको ऐसा करने से बचना चाहिए। दरअसल, न्यूबॉर्न बेबी को एक्सट्रा केयर की जरूरत होती है। कहते हैं कि शुरुआत के दिनों में बच्चा काफी नाजुक होता है और इस समय पर उसे सबसे ज्यादा देखरेख करनी चाहिए। न्यूबॉर्न एक्सपर्ट और मदरहुड हमायिल ने अपने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट के जरिए ये बताया है कि बच्चे के सामने परफ्यूम लगाने से क्यों बचना चाहिए।

नाक होती है सेंसेटिव

बच्चों के सूंघने की शक्ति बहुत तेज होती है। कहते हैं कि जब बच्चा जन्म लेता है तो बेबी को धुंधला दिखाई देता है और वह खुशबू से लोगों को पहचानता है। आपकी खुशबू से ही बच्चा सुरक्षित महसूस करने और आपके साथ जुड़ाव बनाने में मदद करता है। लेकिन परफ्यूम की तेज खुशबू आपके बेबी को जरूरत से ज्यादा उत्तेजित या परेशान कर सकती हैं, जिससे वह चिड़चिड़ा हो सकता है।

फेफड़ों की समस्या

कई खुशबू में एलर्जी पैदा करने वाले तत्व होते हैं जो खांसी, छींक या सांस लेने की समस्या पैदा कर सकते हैं। खासकर उन बच्चों में जिन्हें अस्थमा, एलर्जी या एक्जिमा है।

स्किन के लिए समस्या

- बच्चे लगातार अपने हाथ मुंह में डालते रहते हैं। ऐसे में अगर किसी ने परफ्यूम लगाया है और वह बच्चे को गोद में लेता है तो तो उसकी स्किन या कपड़ों की खुशबू बेबी तक पहुंच सकती है।

नींद में खलल

परफ्यूम की तेज खुशबू बच्चे के दिमाग को भ्रमित कर सकती है और उनके शांत होने या गहरी नींद लेने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है। खासकर सोते समय, खुशबू का इस्तेमाल कम से कम करना सबसे अच्छा है।

डिस्क्लेमर- यह आर्टिकल केवल सूचनात्मक उद्देश्यों के लिए है और पेशेवर चिकित्सा सलाह का विकल्प नहीं है। किसी चिकित्सीय स्थिति के बारे में किसी भी सवाल के लिए हमेशा अपने डॉक्टर की सलाह लें।

संक्षिप्त समाचार

पीएम मोदी ने चेतेश्वर पुजारा को लिखा पत्र, शानदार क्रिकेट करियर के लिए दी बधाई

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में संन्यास लेने वाले पूर्व भारतीय बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा को पत्र लिखकर उनके शानदार क्रिकेट करियर के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि आप खेल के लंबे प्रारूप की खूबसूरती की याद दिलाते थे। आपका शानदार क्रिकेट करियर उल्लेखनीय कौशल और दृढ़ संकल्प के पलों से भरा है। पुजारा ने बीते 24 अगस्त को भारतीय क्रिकेट के सभी प्रारुपों से संन्यास का ऐलान किया था। चेतेश्वर पुजारा ने रविवार को प्रधानमंत्री के पत्र को सोशल मीडिया एक्स पर शेयर करते हुए लिखा कि मुझे अपने संन्यास पर प्रधानमंत्री से प्रशंसा पत्र प्राप्त करके सम्मानित महसूस हो रहा है। व्यक्त की गई हार्दिक भावनाओं के लिए मैं बहुत आभारी हूं।

हॉकी इंडिया ने कृष्ण बी पाठक को 150 अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने पर दी बधाई

राजगीर। हॉकी इंडिया ने रविवार को भारतीय पुरुष हॉकी टीम के गोलकीपर कृष्ण बी पाठक को 150 अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने का कीर्तिमान पूरा करने पर बधाई दी। पंजाब के कपूरथला के रहने वाले 28 वर्षीय कृष्ण बी पाठक ने राजगीर हॉकी स्टेडियम में चल रहे हीरो पुरुष एशिया कप राजगीर 2025 के दूसरे मैच में जापान के खिलाफ यह उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। भारत ने अपने अभियान की शुरुआत चीन पर 4-3 की रोमांचक जीत के साथ की थी, जिसमें कप्तान हरमनप्रीत सिंह की हैट्रिक और जुगराज सिंह का गोल शामिल था, और अब उनका लक्ष्य जीत की लय को बरकरार रखना है।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर तीन दिवसीय खेल महोत्सव का हुआ समापन

विश्वास सारंग के नेतृत्व में निकली 5 किमी लंबी फिट इंडिया साइकिल रैली

नई दिल्ली ■ एजेंसी

राष्ट्रीय खेल दिवस के अंतर्गत आयोजित तीन दिवसीय खेल महोत्सव का समापन रविवार को राजधानी भोपाल में फिट इंडिया साइकिल रैली और वॉटर स्पोर्ट्स शो के साथ हुआ। साइकिल रैली का नेतृत्व सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने किया। खेल एवं युवा कल्याण विभाग तथा भारतीय खेल प्रधिकरण भोपाल शाखा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित साइकिल रैली का शुभारंभ वीआईपी रोड स्थित राजाभोज प्रतिमा से हुआ, जिसमें हजारों की संख्या में साइकिलिस्टों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रैली वीआईपी रोड होते हुए लेक व्यू स्थित वॉटर स्पोर्ट्स अकादमी तक पहुँची। पूरे मार्ग में फिटनेस, पर्यावरण संरक्षण और अनुशासन का संदेश जन-जन तक पहुँचाया गया।

खेल एवं युवा कल्याण मंत्री सारंग ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूरे देश को फिट इंडिया मूवमेंट का आहवान किया था और उनका मंत्र है फिट इंडिया से ही हिट इंडिया होगा। संडे ऑन साइकिल कार्यक्रम ने उसी संदेश को आगे बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि तीन दिवसीय इस खेल महोत्सव के दौरान पूरा प्रदेश खेलमय हो गया और राजधानी भोपाल ने इस आयोजन के माध्यम से पूरे देश को स्वस्थ जीवनशैली का संदेश दिया है। मंत्री सारंग ने साइकिल राइडर एसोसिएशन को बधाई देते हुए कहा कि साइकिल चलाना केवल एक व्यायाम नहीं, बल्कि यह हमारी जीवनशैली में अनुशासन और संतुलन लाने वाला साधन है। प्रदेश में हम साइकलिंग को और बढ़ावा देने के लिये सार्थक प्रयास करेंगे।

साइकिल रैली के समापन पर वॉटर स्पोर्ट्स अकादमी में भव्य जल क्रीड़ा गतिविधियों का आयोजन हुआ। यहाँ खिलाड़ियों ने बड़े तालाब में अपने खेल कौशल का रोमांचक प्रदर्शन किया। कायकिंग, कैनोइंग, स्लैलम और सेलिंग जैसी प्रतियोगिताओं ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन ने राजधानी में खेल महोत्सव के समापन को यादगार बना दिया और यह आयोजन लंबे समय तक खेल प्रेमियों की स्मृतियों में अंकित रहेगा।

हॉकी एशिया कप में भारतीय टीम की लगातार दूसरी जीत जापान को 3-2 से हराया

राजगीर ■ एजेंसी

बिहार के राजगीर स्थित राजगीर हॉकी स्टेडियम में खेले गए मैच में भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने पुरुष एशिया कप 2025 में अपनी विजयी लय जारी रखते हुए पूल %ए% के अपने दूसरे मैच में रविवार को जापान को 3-2 से हरा दिया। भारतीय टीम के लिए कप्तान हरमनप्रीत सिंह (5वें मिनट, 46वें मिनट) और मंदीप सिंह (4वें मिनट) ने गोल किए, जबकि जापान के लिए कोसेई कावाबे (38वें मिनट, 59वें मिनट) ने दो गोल किए। इस जीत के साथ भारत ने टूर्नामेंट में आगे बढ़ते हुए सुपर 4 चरण में जगह पक्की कर ली है। मैच में भारतीय टीम ने पहले क्वार्टर की शानदार शुरुआत की। पहले पांच मिनट में ही लगातार दो गोल दागकर भारतीय टीम ने अपना दबदबा बना लिया। चौथे मिनट में मनदीप सिंह और पांचवें मिनट में कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने गोल कर स्कोर 2-0 कर दिया। दूसरे क्वार्टर में जापान ने अपने प्रदर्शन में सुधार किया और दोनों टीमों के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिली। 19वें मिनट में जापान गोल करने के करीब पहुंचा, लेकिन मामूली अंतर से चूक गया। इसके बाद 24वें मिनट में जापान को पेनल्टी कॉर्नर मिला, लेकिन जरमनप्रीत ने उसे लाइन पर ही बचा लिया और रीटेक के लिए क्लियर कर दिया, जिसे अंततः भारत ने रोक दिया।

आईसेक्ट समूह की राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली खेल प्रतिभाओं को मिला 'स्पोर्ट्स अचीवर्स अवार्ड 2025'

भोपाल ■ प्रतिनिधि

खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के प्रयास के तहत शनिवार को आईसेक्ट विश्वविद्यालय समूह द्वारा रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय और स्कोप ग्लोबल स्किल्स यूनिवर्सिटी के संयुक्त तत्वावधान में स्पोर्ट्स अचीवर्स अवार्ड 2025 का आयोजन किया गया। इस गरिमामय अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में मप्र शासन में खेल एवं युवा कल्याण विभाग के मंत्री विश्वास सारंग, विशिष्ठ अतिथि के रूप में अर्जुन अवार्डी और पूर्व ओलंपियन अशोक ध्यानचंद, अर्जुन अवार्डी और 1983 क्रिकेट वर्ल्ड कप विजेता टीम के सदस्य मदनलाल शर्मा और जलज चतुर्वेदी, जिला खेल अधिकारी रायसेन उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्कोप ग्लोबल स्किल्स यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति और आईसेक्ट समूह के कार्यकारी उपाध्यक्ष डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी उपस्थित रहे। अन्य अतिथियों में, कुलगुरू डॉ. विजय सिंह और रबीन्द्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी की प्रो. चांसलर डॉ. अदिति चतुर्वेदी वत्स, कुलगुरू डॉ. आरपी दुबे, कुलसचिव डॉ संगीता जौहरी और एसीएसयू के कुलसचिव डॉ सितेश सिन्हा शामिल रहे।

इस अवसर पर समारोह में रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय और स्कोप ग्लोबल स्किल्स यूनिवर्सिटी में अध्ययनरत 88 खिलाड़ियों और 11 कोचेस को पुरस्कार राशि एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इनमें हॉकी, जुडो, पैरालंपिक, शूटिंग, बॉक्सिंग, सेलिंग, कयाकिंग

केनोइंग, रेसलिंग, रोइंग, मल्लखम्ब, कराटे, वुशु, एथलेटिक्स, फेंसिंग, ग्रैपलिंग इत्यादि खेलों के खिलाड़ी शामिल रहे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि विश्वास सारंग ने प्लेयर्स को सम्मानित होने पर बधाई दी और खेलों को प्रोत्साहित करने के आईसेक्ट समूह के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि एक अच्छा नागरिक बनने में बेहतर शिक्षा और सकारात्मक खेल भावना का बड़ा योगदान होता है। उन्होंने स्वामी विवेकानंद का जिक्र करते हुए कहा कि एक बार एक युवा ने उनसे सन्यास लेने की बात कही तो विवेकानंद ने उसे फुटबॉल खेलने और स्वयं एवं राष्ट्र को सशक्त बनाने की सीख दी थी। आगे उन्होंने कहा कि आज देश में खेल का सकारात्मक माहौल है।

प्लेयर्स की सहायता के लिए बड़ी संख्या में योजनाएं चलाई जा रही हैं। प्राइवेट सेक्टर भी आगे आकर पहल कर रहा है। यहां तक कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बड़ी खेल प्रतिस्पर्धाओं के खिलाड़ियों से स्वंय बात करके उन्हें प्रोत्साहित करने का प्रयास करते हैं। ऐसे में आम नागरिकों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि वे आगे आकर अपने आसपास खेलों से जुड़ने के लिए सभी को प्रोत्साहित करें। इससे पहले कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और आईसेक्ट विश्वविद्यालयों द्वारा खेलों को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि स्पोर्ट्स इकोसिस्टम को तैयार करने के लिए क्रिकेट एकेडमी की शुरुआत की जा चुकी और फुटबाल एवं बैडमिंटन एकेडमीज को भी शुरू किया जाएगा। इसके अलावा स्पोर्ट्स टूर्नामेंट का आयोजन, स्पोर्ट्स मैनेजमेंट एवं न्यूट्रिशन से संबंधित कोर्सेज की शुरुआत और खेलों में शोध को बढ़ावा देना और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के उत्कृष्ट प्लेयर्स को सहायता प्रदान करने के प्रयास किए जाएंगे।

व्यापार

अगस्त में एफपीआई ने की जमकर बिकवाली एक महीने में 34,993 करोड़ रुपये निकाले

नई दिल्ली ■ एजेंसी

घरेलू शेयर बाजार में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) के कारोबार के लिहाज से अगस्त का महीना काफी बुरा साबित हुआ। इस महीने विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने शेयर बाजार से 34,993 करोड़ रुपये यानी करीब चार अरब डॉलर की निकासी कर ली। फरवरी के बाद पहली बार विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने घरेलू शेयर बाजार से इतनी बड़ी मात्रा में अपने पैसे निकाले हैं। फरवरी के महीने में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने 34,574 करोड़ रुपये की बिकवाली की थी।

अगस्त के पहले जुलाई के महीने में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने घरेलू शेयर बाजार में 17,741 करोड़ रुपये की बिकवाली की थी। इस तरह अगस्त के महीने में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने जुलाई की तुलना में करीब दोगुना बिकवाली की है। साल 2025 में जनवरी से लेकर अगस्त तक विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक घरेलू शेयर बाजार से 1.30 लाख करोड़ रुपये की निकासी कर चुके हैं।

धामी सिक्योरिटीज के वाइस प्रेसिडेंट प्रशांत धामी का कहना है कि घरेलू शेयर बाजार में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों की बिकवाली के लिए वैश्विक स्तर पर बनी पर प्रतिकूल परिस्थितियों के साथ ही घरेलू स्तर पर भी कई कारणों को जिम्मेदार माना जा सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के भारतीय उत्पादों पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाने की वजह से निवेशकों के सेंटीमेंट्स प्रभावित हुए हैं। भारी भरकम टैरिफ की वजह से भारत की व्यापारिक प्रतिस्पर्धा और ग्रोथ आउटलुक को लेकर आशंका बढ़ गई है।

इसके साथ ही घरेलू मोर्चे पर जून में खत्म हुई तिमाही के दौरान कॉरपोरेट सेक्टर की कई बड़ी कंपनियों के कमजोर प्रदर्शन की वजह से भी घरेलू शेयर बाजार पर दबाव की स्थिति बनी है। प्रशांत धामी का मानना है कि विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों की घरेलू शेयर बाजार में बड़े पैमाने पर की जा रही बिकवाली की एक वजह भारत में शेयरों का ऊंचा वैल्यूएशन भी है। भारत की तुलना में दुनिया के अन्य बाजारों में वैल्यूएशन कम आंका गया है, जिसकी वजह से विदेशी निवेशकों का एक वर्ग अपनी पूंजी को भारत से निकाल कर दुनिया के दूसरे बाजारों में शिफ्ट कर रहा है। हालांकि, प्राइमरी मार्केट के लिहाज से देखा जाए तो विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद खरीदार बने हुए हैं। घरेलू शेयर बाजार के सेकेंडरी मार्केट में लगातार बिकवाली करने के बावजूद विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने इस साल प्राइमरी मार्केट से अभी तक 40,305 करोड़ रुपये की खरीदारी की है।

भारत की 8 सबसे मूल्यवान कंपनियों के कुल मार्केट वैल्यू में गिरावट

मुंबई। बीते सप्ताह भारत की 8 सबसे मूल्यवान कंपनियों के कुल मार्केट वैल्यू में करीब 2,24,630 करोड़ की गिरावट आई। इस दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज और एचडीएफसी बैंक सबसे अधिक प्रभावित रहीं। यह गिरावट शेयर बाजार में मंदी के संकेत दिख रही है। बीएसई का बेंचमार्क इंडेक्स पिछले सप्ताह 1,497.2 अंक (1.84 प्रतिशत) गिर गया। टॉप-10 कंपनियों में से, रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, इंफोसिस, बजाज फाइनेंस और एलआईसी का मार्केट वैल्यू कम हुआ, जबकि टीसीएस और हिंदुस्तान यूनिलीवर के शेयरों में बढ़त देखी गई। रिलायंस इंडस्ट्रीज का मार्केट कैप 70,707 करोड़ घटकर 18,36,424 करोड़ हो गया। एचडीएफसी बैंक का मार्केट कैप 47,482 करोड़ घटकर 14,60,864 करोड़ पर आ गया। आईसीआईसीआई बैंक का मार्केट कैप 27,135 करोड़ घटकर 9,98,291 करोड़ और भारती एयरटेल का 24,947 करोड़ घटकर 10,77,213 करोड़ हुआ।

सरकार ने एक सितंबर से बदले नियम-अब चांदी के गहनों की भी होगी हॉलमार्किंग

नई दिल्ली। सोने के गहनों की हॉलमार्किंग का नियम लागू होने के बाद अब केंद्र सरकार ने चांदी के गहनों पर भी हॉलमार्किंग की तैयारी कर ली है। केंद्र का इरादा सोने के गहनों की तरह ही चांदी के गहनों की शुद्धता की गारंटी की जानकारी भी ग्राहकों तक पहुंचाने की है। चांदी के गहनों की शुद्धता की गारंटी के लिए कल यानी 1 सितंबर से हॉल मार्किंग का नियम लागू हो जाएगा। सरकार अभी चांदी के गहनों पर हॉल मार्किंग के नियम को अनिवार्य नहीं कर रही है। फिलहाल हॉल मार्किंग का ये नियम वॉलंटरी होगा। यानी गहने खरीदने वाले ग्राहक की इच्छा पर निर्भर करेगा कि वो हॉलमार्क वाला चांदी का गहना खरीदे या बिना हॉलमार्क वाला गहना खरीदे।

चांदी के गहनों की हॉलमार्किंग के लिए भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) ने 6 नए स्टैंडर्ड 800, 835, 900, 925, 970 और 990 तय किए हैं। अब हर हॉलमार्क वाली ज्वेलरी पर एक 6 अंकों का यूनिक कोड (एचयूआईडी) भी होगा। इस कोड से तुरंत पता चल जाएगा कि चांदी के गहने की शुद्धता कितनी है। ये सिस्टम पुराने हॉलमार्किंग तरीके की जगह लेगा और इससे बाजार में ज्यादा पारदर्शिता आएगी। हॉलमार्किंग का नियम लागू हो जाने के बाद अब चांदी के गहनों के ग्राहक आसानी से बीआईएस केयर ऐप पर जाकर वेरिफाई एचयूआईडी फीचर की मदद से चेक कर सकेंगे कि गहनों पर अंकित कोड असली है या नकली। हॉलमार्किंग से ये बात भी तय हो जाएगी कि चांदी की शुद्धता उतनी ही है, जिसके लिए ग्राहक पैसा चुका रहा है। इससे चांदी के गहनों की खरीदारी पहले से ज्यादा सुरक्षित और भरोसेमंद हो जाएगी। दरअसल, साल 2021 में केंद्र सरकार ने सोने के गहनों पर हॉलमार्किंग को अनिवार्य कर दिया था। इसी तर्ज पर अब चांदी की ज्वेलरी के लिए भी ये सिस्टम लाया जा रहा है। सरकार का उद्देश्य सर्राफा बाजार को ज्यादा पारदर्शी बनाना और ग्राहकों को असली उत्पाद उपलब्ध कराना है। हॉलमार्किंग शुरू हो जाने के बाद चांदी के गहनों के ग्राहक भी किसी भी घोखाधड़ी से बच सकेंगे।

भारत मोबाइल के हरेक कलपुर्जे का विनिर्माण करेगा जिसमें मेड इन इंडिया चिप्स भी शामिल

नई दिल्ली ■ एजेंसी

केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने देश के प्रथम टेम्पर्ड ग्लास विनिर्माण कारखाने का नोएडा में उद्घाटन किया। यह टेम्पर्ड ग्लास मोबाइल उपकरणों में काम आयेगा। यह कारखाना ऑप्टीमस इलेक्ट्रॉनिक्स ने यूसए के कॉर्निंग इंकॉर्पोरेटेड की साझेदारी में लगाया है। इसमें उच्च गुणवत्ता के टैंपर्ड ग्लास का उत्पादन दुनिया भर में प्रचलित ब्रांड इंजीनियर्ड बाय कॉर्निंग के अंतर्गत किया जाएगा। उत्पादों की आपूर्ति घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय, दोनों ही बाजारों में की जाएगी।

इस अवसर पर वैष्णव ने कहा भारत एक-एक करके मोबाइल फ़ोन, हरेक कलपुर्जे का विनिर्माण करता जा रहा है। इनमें चिप्स, कवर ग्लास, लैपटॉप एवं सर्वर के उपादान आदि शामिल हैं। उनके अनुसार इन घरेलू विनिर्माण सुविधाओं के बूते हमरास देश इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण सुविधा के क्षेत्र में वैश्विक शक्ति बन जाएगा। मंत्री महोदय ने यह भी बताया कि जल्द ही भारत में निर्मित यानी मेड इन इंडिया चिप भी बाज़ार में आएगा। वह आत्मनिर्भर भारत की दिशा में और एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी। उन्होंने रेखांकित किया कि पिछले 11 वर्ष में भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स के विनिर्माण में छह गुना वृद्धि हुई है। इसके बूते इलेक्ट्रॉनिक्स का घरेलू उत्पादन 11.5 लाख करोड़ रुपए मूल्य का हो गया है। इसमें 3 लाख करोड़ रुपए मूल्य का निर्यात भी शामिल है। साथ ही इस क्षेत्र में 25 लाख लोग प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में रोजगार पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश में इलेक्ट्रॉनिक्स का समूचा इकोसिस्टम तेज़ी से बढ़ रहा है और एक-एक करके उनकी मूल्यवर्धन क्षमता बढ़ाई जा रही है।

कार्यालय कलेक्टर (खनिज शाखा) जिला रायसेन (म0प्र0)

कमांक/ 664 /खनिज/2025 रायसेन, दिनाक 28/08/2025

सूचना

(म0प्र0 गौण खनिज नियम 1996 के नियम, 18-क)

यह कि सूचित किया जाता है कि, श्री महेंद्र कुमार मित्तल निवासी बी. 230 शाहपुरा भोपाल 462039 (म.प्र.) द्वारा म.प्र.गौण खनिज नियम 1996 के नियम, 18-क के तहत उत्खनिपट्टा प्राप्त करने हेतु ऑनलाईन आवेदन पत्र दिनांक 25.08.2025 को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत आवेदन पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है:-

आवेदन का संक्षिप्त विवरण

क्रं.	तहसील	ग्राम	खसरा नंबर	रकबा	भूमि का प्रकार	खनिज का नाम	रिमार्क
01	गौहरगंज	समनापुरकलां,	190	4.383हे0 में से 2.000हे0	निजी भूमि	खनिज पत्थर से गिट्टी (यांत्रिक क्रिया से गिट्टी निर्माण) एवं यांत्रिक क्रिया द्वारा निर्मित रेत (एम-सैंड)	4.383हे0
			कुल रकबा	2.000हे.			

उपरोक्त प्रस्तुत ऑनलाईन आवेदन पत्र में आवेदित क्षेत्र के संबंध में यदि किसी को कोई आपत्ति हो अथवा इस संबंध में कोई अन्य दावा प्रस्तुत करना चाहता हो तो इस सूचना के प्रकाशित होने की तारीख से 30 दिवस के भीतर कार्यालय कलेक्टर, खनिज शाखा, जिला रायसेन में आपत्ति का लेख/कारण दर्शाते हुए लिखित रूप में प्रमाण सहित प्रस्तुत करें।

नियत अवधि के उपरांत किसी भी आपत्ति/दावे पर विचार नहीं किया जाएगा।

खनि अधिकारी
जिला रायसेन

जी 18025 /25

कार्यालय न्यायालय सक्षम प्राधिकृत अधिकारी एवं अधीक्षक सिंघौरी अभ्यारण्य बाड़ी

क्रमांक / 1488 बाड़ी, दिनांक 28/08/2025

नोटिस भारतीय वन अधिनियम 1927 की धारा 52(4) ख के तहत

जाहिर सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि परिक्षेत्र बाडी में अवैध वनोपज सागौन 02 नग, 0.109 घ0मी0 अवैध रूप से परिवहन करते हुये मोटरसायकल जप्त होने से वन अपराध प्रकरण क्रमांक 42400/25 दिनांक 05.08.2025 पंजीवद्व हुआ है। उक्त वन अपराध में मोटरसायकल का उपयोग होने के कारण इस न्यायालय में राजसात की कार्यवाही प्रचलित है।

क्रमांक	वाहन मोटरसायकल का प्रकार	रजिस्ट्रेशन नंबर
1	मोटरसायकल होण्डा साईन	MP-04-KM-6512 Ch.No. - ME4JC36JMC7278045

अतः इस समाचार पत्र में विज्ञप्ति के माध्यम से सूचित किया जाता है कि यदि कोई व्यक्ति उक्त वाहन के संबंध में हित रखता है तो वह विज्ञप्ति प्रकाशन की दिनांक से 10 दिवस के अंदर इस न्यायालय में उपस्थित होकर जप्त वाहन के स्वामित्व संबंधी अभिलेख तथा अपने पक्ष समर्थन में प्रमाण प्रस्तुत करें, निर्धारित समयावधि में उपस्थित न होने की स्थिति में एक पक्षीय कार्यवाही की जाकर वाहन राजसात संबंधी आदेश पारित कर दिया जावेगा। बाद में कोई तर्क मान्य नही होगा। सूचना पत्र आज दिनांक 28/08/2025 को मेरी पद एवं मुद्रा से जारी किया गया।

(मयंक राज स.व.सं.)
सक्षम प्राधिकृत अधिकारी
अधीक्षक
सिंघौरी अभ्यारण्य बाड़ी

जी 18030 /25

संक्षिप्त समाचार

भगवान् श्री अग्रसेन जी महाराज एवं कुलदेवी माता लक्ष्मी की 18वीं महाआरती 8 को

भोपाल, निप्र। अग्रवाल समाज के आराध्य देव भगवान श्री अग्रसेन महाराज और कुलदेवी माता लक्ष्मी की महाआरती चैत्र नवरात्र 2024 से प्रारंभ की गई थी। जो कि महीने के प्रथम रविवार को अग्रसेन वाटिका, आईटीसी पार्क, कमला पार्क के सामने, भोपाल में आयोजित की जा रही है। अभी तक सतरहा महाआरती सम्पन्न हो चुकी है। अठाहरवीं महाआरती सोमवार 8 सितंबर 2025 को सायं 6 बजे होगी। जिसकी जजमानी स्वास्ति-दिनेश अग्रवाल (शुभम डेवलपर्स एवं श्री प्रभाकर डेवलपर्स) भोपाल द्वारा की जा रही है। मीडिया प्रभारी नितिन गुप्ता एवं विनीत अग्रवाल ने बताया कि इस बार रविवार को चंद्र ग्रहण होने के कारण आरती सोमवार को की जा रही है। भगवान श्री अग्रसेन महाराज जी के करूणामीय स्वभाव, एक ईंट-एक रूपया से समाजवाद के प्रथम प्रणेता, युग पुरूष, महादानी एवं राम राज्य के समर्थक के सिद्धांतों को अपनाकर एवं समाज के कल्याण की भावना के साथ ही बच्चों को भगवान श्री अग्रसेन महाराज जी के जीवन से प्रेरणा मिले, इसी उद्देश्य से महाआरती का आयोजन निरंतर किया जा रहा है। समस्त अग्रबंधुओ से निवेदन है कि सपरिवार महाआरती में शामिल होकर प्रसाद अवश्य ग्रहण करें। श्रीमान संपादक महोदय जी उक्त समाचार को अपने प्रतिष्ठित समाचार पत्र में प्रकाशित किए जाने का अनुरोध है।

गीत संगीत कार्यक्रम में गायक कलाकारों ने गुनगुनाएं नए पुराने नगमें

नर्मदापुरम। नर्मदापुर युवा मंडल द्वारा प्रति रविवार आयोजित होने वाला सुरीला नर्मदापुरम कार्यक्रम इस रविवार भी शाम को हुआ। कार्यक्रम के दौरान कई स्थानीय गायक कलाकारों एवं पार्क घूमने आए लोगों ने भी गीत संगीत गाकर मनोरंजन किया। बारिश के बीच सुरीला नर्मदापुरम कार्यक्रम और ही सुरीला हो गया। इस दौरान नए पुराने गीतों के नगमें सुरीली आवाज में गाए गए। कार्यक्रम से जुड़े मनीष परदेशी ने बताया कि कार्यक्रम में गीत संगीत के साथ कविता भी सुनाई गई। यह कार्यक्रम अब अपनी नई पहचान बना चूका है। इस रविवार स्थानीय गायक कलाकार कमल सिंह राजपूत, नितिन परिता, अतुल मंडलोई, प्रकाश आहूजा, प्रताप सिंह तोमर, तरुण देव, केएन त्रिपाठी, हरीश मांझी, हिमांशी परिता, एसएस राजपूत, विनय रैकवार, मनीष दुबे, माधवी दुबे, तन्मय ने गीत गाए। कार्यक्रम के अंत में नर्मदापुर मंडल अध्यक्ष अखिलेश खंडेलवाल, दीपक हेमनानी, रुपेश राजपूत, विशाल दीवान, सुंदरम अग्रवाल, सुमित गौर, कृष्णकुमार चौकसे, आशीष वर्मा सहित अन्य सदस्यों ने सभी गायक कलाकारों का सम्मान किया।

श्रमिक ई-श्रम पोर्टल पर करा सकते है अपना पंजीयन

नर्मदापुरम। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गिग वर्कर्स, प्लेटफार्म श्रमिक और अन्य असंगठित श्रमिकों के लिए पंजीयन अभियान शुरू किया गया है। यह अभियान 25 अगस्त से प्रारंभ हुआ है और 5 सितंबर 2025 तक चलेगा, जिसमें श्रमिक ई-श्रम पोर्टल पर अपना पंजीयन करा सकते हैं। श्रमिक पर जाकर अपना पंजीयन करा सकते हैं। पंजीयन के लिए श्रमिक अपने मोबाइल के माध्यम से या निकटतम कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) पर संपर्क कर सकते हैं। श्रमिकों के अपने निःशुल्क पंजीयन के लिए आधार नंबर, आधार से लिंक मोबाइल नंबर तथा श्रमिकों को अपने बचत बैंक खाते का आईएफएससी कोड और खाता संख्या की जानकारी देनी होगी। सहायक श्रमायुक्त नर्मदापुरम संभाग नर्मदापुरम ने जिले में कार्यरत सभी श्रमिकों से अपील की है कि वे इस अभियान के तहत अपना पंजीयन जरूर कराएं।

कदंब वृक्षारोपण अभियान का समापन

सांची विधायक और भाजपा नेताओं ने किया पौधारोपण, हरित क्रांति श्रमदानियों को मिलेगा सम्मान

रायसेन ■ निसं

रायसेन में सावन माह में शुरू किया गया कदंब वृक्षारोपण अभियान रविवार को समापन हुआ। सोशल वेलफेयर फाउंडेशन और रायसेन जिला विकास समिति द्वारा चलाए गए %बस एक कदम और प्रकृति की ओर% अभियान के समापन समारोह में सांची के पूर्व मंत्री एवं विधायक डॉ. प्रभुराम चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष सविता जमना सेन और भाजपा जिला अध्यक्ष राकेश शर्मा विशेष अतिथि के रूप में शामिल हुए। डॉ. चौधरी ने कहा कि जिला विकास समिति नगर और जिले के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने जिले का विभाजन रोकने और सांची को बचाने जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर समिति के योगदान की सराहना की।

आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगा

।जपा जिला अध्यक्ष राकेश शर्मा ने कहा कि रायसेन को हरा-भरा बनाने का यह संकल्प आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगा। समिति अध्यक्ष हरीश मिश्र ने एक महत्वपूर्ण घोषणा की। उन्होंने बताया कि सड़क किनारे लगे कदंब वृक्षों की देखभाल करने वाले हरित क्रांति श्रमदानियों को अगले वर्ष 5,100 रुपए और प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया जाएगा।

कार्यक्रम में बृजेश चतुर्वेदी, विनय चतुर्वेदी, डॉ. एके शर्मा, नीलेंद्र मिश्र, मनोज कुशवाहा, दिनेश अग्रवाल और समिति प्रवक्ता अमित ठाकुर सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन संघर्ष शर्मा ने किया।

संस्कार धाम और रामलीला मैदान मंदिर में पूजा-अर्चना

रायसेन, निप्र। राधाष्टमी के पावन अवसर पर रायसेन के मंदिरों में श्री राधा जी की विशेष पूजा-अर्चना की गई। संस्कार धाम मंदिर में विधि-विधान से पूजन और आरती का आयोजन किया गया। पंडित राजेन्द्र दुबे शास्त्री ने पूजन कराया।

बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए: संस्कार महिला मंडल ने भजन-कीर्तन का आयोजन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। मंदिर में प्रसाद का वितरण भी किया गया।

श्री कृष्ण और राधा रानी का विशेष श्रृंगार: रामलीला मैदान स्थित श्री राधा कृष्ण मंदिर में भगवान श्री कृष्ण और राधा रानी का विशेष श्रृंगार किया गया। सुबह से शाम तक मंदिर में भक्तों का आना-जाना लगा रहा। शाम को महा आरती के बाद प्रसाद वितरण का कार्यक्रम रखा गया। महलपुर पाठा में भी राधाष्टमी का विशेष आयोजन हुआ। यहां सांची विधायक डॉ प्रभुराम चौधरी में पहुंच कर पूजार्चना की और राधा रानी का आशीर्वाद प्राप्त कर क्षेत्रवासियों की सुख-समृद्धि की कामना की।

कायस्थ महासभा ने मनाई राधाष्टमी: श्री चित्रगुप्त राधा कृष्ण मंदिर में कायस्थ महासभा की ओर से रविवार शाम 7 से राधाष्टमी धूमधाम और उत्साह के साथ मनाई गई समाज के छोटे-छोटे बच्चों ने राधा जी का रूप धारण किया इस दौरान समाज के लोगों ने आरती उतार कर भजन कीर्तन किया।

युवती की आपत्तिजनक फोटो एडिट कर वायरल की पुरानी रंजिश में बदनाम करने का प्रयास आईटी एक्ट में एफआईआर दर्ज

नर्मदापुरम /शहर में एक युवती की चार साल पुरानी तस्वीरों को एडिट कर वॉट्सऐप ग्रुप में वायरल करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने शनिवार रात आरोपी युवक के खिलाफ आईटी एक्ट और बीएनएस की धाराओं में मामला दर्ज किया है।

एडिट की गई पुरानी तस्वीरें, बदनाम करने की मंशा: पुलिस के अनुसार, यह तस्वीरें करीब चार साल पुरानी हैं, जिन्हें एडिट कर आपत्तिजनक रूप में तैयार किया गया और फिर शनिवार शाम वॉट्सऐप के दो अलग-अलग ग्रुप में पोस्ट किया गया। आरोपी की पहचान रामचंद्र भटनागर उर्फ चंदू के रूप में हुई है।

आरोपी पर रंजिश में फोटो वायरल करने का आरोप: देहात थाना प्रभारी सौरभ पांडे ने बताया कि शाम करीब 4 बजे फोटो वायरल होने की जानकारी पीड़िता को मिली। इसके बाद वह संबंधित युवक के साथ थाने पहुंची और आरोपी रामचंद्र के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। शिकायत में बताया गया कि आरोपी से पहले से एक दुकान को लेकर विवाद चल रहा था। इसी रंजिश के चलते उसने यह हरकत की।

आईटी एक्ट और बीएनएस की धाराओं में केस: पुलिस ने रात करीब 9:45 बजे आरोपी रामचंद्र भटनागर के खिलाफ बीएनएस की धारा 79 और आईटी एक्ट की धारा 67 के तहत मामला दर्ज कर लिया है। फिलहाल आरोपी की गिरफ्तारी की प्रक्रिया जारी है और पुलिस मामले की आगे जांच कर रही है।

22 हितग्राहियों को मिला मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान का लाभ

नर्मदापुरम। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की स्वेच्छानुदान मद से उपचार के लिए जिले के 22 हितग्राहियों को कुल 08 लाख 95 हजार रूपए की आर्थिक सहायता स्वीकृत की गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार बनखेड़ी निवासी प्रवीण कुमार एवं नर्मदापुरम निवासी विजय कामले को 15-15 हजार रुपए की आर्थिक सहायता स्वीकृत की गई है। इसी प्रकार नर्मदापुरम निवासी अब्दुल हमीद खान सिवनी मालवा निवासी सु अंजलि को 20-20 हजार रुपए, चांदौन निवासी शिवेंद्र कुमार को 25 हजार रुपए, पिपरिया निवासी विजय सिंह साहू, सिवनी मालवा निवासी मती कृष्णा बाई, नर्मदा पुरम निवासी बेबी ऑफ फायजा खान, सिवनी मालवा निवासी दिनेश कुमार यादव, माखन नगर निवासी समर चौरे एवं पिपरिया निवासी कुमारी नमामि सिलावट को 75- 75 हजार रूपए रूपए की आर्थिक सहायता स्वीकृत की गई है।

विमला शुक्ल का जन शताब्दी महोत्सव मनाया गया

गुजराती बाज खेडावाल ब्राह्मण समाज द्वारा सम्मान भी किया गया

नर्मदापुरम/ 100 वर्ष का जीवन एक अद्वितीय और अनमोल अनुभव, जिसमें व्यक्ति जीवन के विभिन्न चरणों से गुजरता है और कई चुनौतियों का सामना करता है। विमला शुक्ल समाज में एक ऐसी प्रेरणा है। गुजराती बाज खेडावाल समाज नर्मदापुरम की विमला शुक्ल का शतायु जीवन किसी वरदान से कम नहीं है। 31 अगस्त 1925 को दमोह में जन्मी विमला स्व गुलाव शंकर शुक्ल के व्यक्तित्व का पता इस बात से मिल जाता है कि उन्होंने समाज के बच्चों को शिक्षा में मदद के लिए छात्रवृत्तियां भी प्रदान की ताकि कोई बच्चा सिर्फ पैसों की कमी के कारण पढाई से वंचित न रहे। 31 अगस्त 2025 को विमला शुक्ल का जन शताब्दी महोत्सव मनाया गया जिसमें उनका सम्मान मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेडावाल ब्राह्मण समाज तथा गुजराती बाज खेडावाल ब्राह्मण समाज नर्मदापुरम द्वारा किया गया। इस दौरान मध्यक्षेत्रीय गुजराती बाज खेडावाल ब्राह्मण समाज अध्यक्ष अनिमेष प्रमोद शंकर पंडया, बाज

खेडावाल दर्शन पत्रिका के संपादक शैलेन्द्र धगट, नर्मदापुरम से सौरभ तिवारी, अशोक दुबे, ओपी तिवारी, मदन जोशी, संदीप दुबे, दिनेश तिवारी, अरूण तिवारी, सिंधु दुबे, पुष्पा जोशी, मंगला तिवारी, मोनिका दुबे, स्वाति दुबे के अलावा परिवार के विशाल धगट और अधिवक्ता अजय तिवारी, एचएस यादव, मनोज जराठे आदि ने दादी विमला शुक्ल को 100 वें जन्मदिवस पर शुभकामनायें दी और उनके जीवन के हर दिन से एक सीख लेने की बात कहीं।

पीएम नरेंद्र मोदी और उनकी दिवंगत माँ पर की गई अशोभनीय टिप्पणी

मोदी का ही अपमान नहीं बल्कि देश की जनता का अपमान है: जिला अध्यक्ष दीपक महालहा

नर्मदापुरम ■ अमृत दर्शन

बिहार के दरभंगा में कांग्रेस नेता राहुल गांधी के स्वागत मंच से देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनकी दिवंगत पूज्य माताजी पर की गई अशोभनीय टिप्पणी के विरोध में भारतीय जनता युवा मोर्चा नर्मदापुरम द्वारा लोकसभा नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का पुतला दहन एसपीएम गेट नं.4 पर भाजयुमो जिलाध्यक्ष दीपक महालहा के नेतृत्व में किया गया इस दौरान जिलाध्यक्ष दीपक महालहा ने कहा कि राहुल गांधी इस देश की परंपराओं और इस लोकतंत्र को तार तार कर रहे है। पहले तो झूठ की यात्रा और अब इस वोटर अधिकार यात्रा में चुने हुए प्रधानमंत्री को मां-बहन की गाली देना आपत्तिजनक ही नहीं खेदजनक भी है। इस देश की कभी ये परंपरा नहीं रही कि आप प्रधानमंत्री को

गाली दे रहे है। राहुल गांधी को चाहिए खुद आगे आकर जनता से माफी मांगे, ये नरेंद्र मोदी का ही अपमान नहीं बल्कि देश की जनता का अपमान है। प्रधानमंत्री को गाली देकर इस देश की राजनीति को बदनाम किया जा रहा है जो की शर्मनाक है। भाजयुमो मंडल अध्यक्ष सुंदरम अग्रवाल ने बताया कि इस विरोध प्रदर्शन में कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई।

इस विरोध प्रदर्शन में सांसद दर्शन सिंह चौधरी, राज्यसभा सांसद माया नारोलिया, नपा अध्यक्ष नीतू यादव, भाजपा जिला महामंत्री प्रसन्ना हर्णे, मुकेश मैना, लोकेश तिवारी, राजेश तिवारी, अध्यक्ष रूपेश राजपूत, विकास नारोलिया, राहुल सोलंकी, हंस राय, रोहित गौर, मनोहर बढ़ानी, योगेंद्र राजपूत, महेंद्र यादव प्रशांत दीक्षित, मनीष परदेशी, गजेन्द्र चौहान, राहुल ठाकुर सहित युवा मोर्चा कार्यकर्तागण विमल साहू, गौरव नायक, मुकेश राठौर, रहमान खान, वीरू पटवा, पीयूष दुबे, दुर्गेश मिश्रा, जसबीर सिंह, सुमित मीणा, अमन चुटिले, पंकज खत्री, प्रवेश सोनी, हर्ष सराठे, सागर संतोरे, कृतिक शिवहरे, यश तिवारी, पीयूष वग्गन, केतन बरगले, सहित अन्य भाजपा व भाजयुमो कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे।

तवा डैम का जलस्तर खतरे के निशान के करीब, प्रशासन सतर्क

नर्मदापुरम ■ अमृत दर्शन

तवा डैम का जलस्तर रविवार सुबह 9 बजे तक खतरे के निशान के बेहद करीब पहुंच गया है। ऊपरी इलाकों में लगातार हो रही बारिश और बांध में पानी की बढ़ती आवक को देखते हुए, प्रशासन ने जलस्तर को नियंत्रित करने के लिए तीन गेट 2 फीट की ऊंचाई तक खोल रखे हैं।

प्रमुख आंकड़े (सुबह 9 बजे तक): जलस्तर - 354.91 मीटर (1164.40 फीट), जो कि पूर्ण जलाशय स्तर 355.40 मीटर (1165.98 फीट) के बहुत करीब है।

जीवंत क्षमता: बांध की कुल क्षमता 1944 स्ष्ट्रूमें से 1849 स्ष्ट्रू पानी भरा है, जो कुल क्षमता का 95.11% है।

आज की बारिश- पिछले 24 घंटों में 2.20 मिमी: बारिश दर्ज की गई। इस मानसून सीजन में अब तक कुल 1067.40 मिमी बारिश हो चुकी है।

पानी का प्रवाह: आवक ¬बांध में पानी की औसत आवक 650 क्यूमेक (22,954 क्यूसेक) है।

निर्गमन: स्पिलवे गेट से 298 क्यूमेक (10,528 क्यूसेक) पानी छोड़ा जा रहा है।

पावर हाउस (विद्युत गृह) से 104 क्यूमेक (3,672 क्यूसेक) पानी छोड़ा जा रहा है।

कुल निर्गमन: नदी में कुल 402 क्यूमेक (14,207 क्यूसेक) पानी छोड़ा जा रहा है। प्रशासन ने नदी के निचले हिस्सों में बसे गाँवों और लोगों को सतर्क रहने और सुरक्षित स्थानों पर जाने की सलाह दी है।

मॉर्निंग वॉक पर निकली बुजुर्ग महिला से धोखाधड़ी बेटे का इलाज के नाम पर झाड़फूंक

सोने के जेवर उतरवाए, आंख बंद करते ही भाग निकले ठग

नर्मदापुरम ■ अमृत दर्शन

विवेकानंद घाट के पास कोठी बाजार में मॉर्निंग वॉक पर निकली एक बुजुर्ग महिला से धोखाधड़ी हुई। दो युवकों ने बेटे के इलाज के लिए झाड़फुंक करने के नाम पर महिला के सोने के जेवर उतरवा लिए और भाग गए। जिसके बाद महिला जोर-जोर से चिल्लाने लगी। वारदात से हड़कंप मच गया। सूचना मिलते ही कोतवाली थाना पुलिस मौके पर पहुंची। धोखाधड़ी करने वाले युवकों की तलाश शुरू की। पुलिस ने अज्ञात युवकों के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज किया। टीम आरोपियों की जांच में जुटी है। पुलिस के मुताबिक फरियादी त्रिवेणी पति राजाराम यादव 63 निवासी भारत पेपर वाली में रहती है। फरियादी ने पुलिस को बताया कि वो सुबह करीब 6.30 बजे घूमने और फूल लेने के लिए निकली थी। विवेकानंद घाट के पास एक युवक मिला। जिसने मुझसे स्वास्थ्य शिविर का पूछा। फिर बातों में बहलाते हुए मुझसे कहा कि आपके बेटे के सिर में दर्द रहता है। आप चाहे तो उसका समाधान करवा सकते है। युवक ने महिला से

कहा कि इलाज के लिए आपको मैं चांदनी के पेड़ की दो पत्तियां मंत्र पढ़कर दूंगा। उससे वो ठीक हो जाएगा। बुजुर्ग महिला उसके बहकावे में आ गई। फिर उसने थोड़ी दूर एक गली में ले जाकर चांदनी के पेड़ से पत्तियां तोड़कर ले गया। जहां उसका एक ओर साथी आ गया। फिर ठग ने कहा कि तुमने सोने के जेवर पहने है, मंत्र ऐसे में काम नहीं करेंगे। महिला ने सोने के कड़े, मंगलसूत्र, चेन और अंगूठी उतारकर ठग के दूसरे साथी को दें दिए। फिर आरोपी ने कहा कि मैं मंत्र पढ़ूंगा, तब तक आप आंखें बंद रखे। कुछ देर बाद महिला ने जैसे ही आंखे खोली तो देखा दोनों युवक बाइक से भाग रहे थे। महिला ने चिल्लाया, लेकिन तब तक आरोपी भाग निकले। कोतवाली टीआई कंचन सिंह ठाकुर ने बताया बेटे के इलाज के नाम पर धोखाधड़ी हुई है। युवकों ने बुजुर्ग से सोने के जेवर उतरवाएं। आरोपियों की तलाश के लिए अलग अलग टीमें बनाई है।

पुलिस ने की शातिर मोटर सायकल चोर से छह मोटर सायकल जप्त

नर्मदापुरम। पुलिस अधीक्षक डॉ. गुरकरन सिंह के मार्ग दर्शन में, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अशुतोष मिश्र एवं एसडीओपी मोहित कुमार यादव के दिशा निर्देशन मे पिपरिया पुलिस ने शातिर चोर को पकडने में सफलता प्राप्त की। आज रविवार को पिपरिया पुलिस टीम को विश्वशनीय मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि एक लड़का एक प्लेटिना मोटर साइकिल लेकर बेचने की फिराक से शोभापुर रोड टोल टेक्स के पास घूम रहा है। सूचना पर थाना प्रभारी गिरीश त्रिपाठी द्वारा तत्काल थाना स्तर पर टीम गठित कर तत्काल टीम के सूचना तस्दीक हेतु टोल टेक्स पहुंचा जहां मुखबिर द्वारा बताए गए हुलिये का लड़का एक प्लेटिना मोटर साइकिल लेकर खड़ा दिखा जो पुलिस को आता देख शोभापुर की ओर भागने लगा। पीछा कर पकड़ कर उसका नाम पता पूछा, जिसने अपना नाम सुरेन्द्र कुशवाहा पिता दौलत सिंह कुशवाहा उम्र 25 साल निवासी जनकपुर थाना बरेली जिला रायसेन का होना बताया। जिससे प्लेटिना मोटर सायकल के कागजात मांगे जो पहले तो सुरेन्द्र द्वारा पुलिस को गुमराह किया। शंका होने पर सुरेन्द्र को मय मोटर सायकल के थाना लाकर बारीकी से पूछताछ की गई। जिसने प्लेटिना मोटर सायकल पिपरिया इतवारा बाजार पिपरिया से चोरी करना बताया और इसके अवाला बरेली, सोहागपुर, गाडरवारा, बाड़ी से भी पाँच मोटरसाइकिल चोरी करना और चोरी की हुई मोटर सायकलो को अपने विशेष स्थान पर छुपाकर रखना बताया।

डालका-गावसन- के ग्रामीणों की राह होगी सुगम

डामरीकृत सड़क निर्माण का विधायक पाटीदार ने किया भूमिपूजन

खरगोन, निप्र। विधानसभा क्षेत्र के ग्राम डालका- गावसन को जोडने् वाली सड़क निर्माण की लंबे समय से चली आ रही मांग जल्द ही पूरी होने वाली है। करीब 3 किमी के इस मार्ग का रविवार को विधायक बालकृष्ण पाटीदार ने समारोहपूर्वक भूमिपूजन कर ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि, जल्द ही यह सड़क बनकर ग्रामीणो की आवाजाही की राह सुगम करेगी। विधायक श्री पाटीदार के गांव पहुंचने पर सैंकड़ों की संख्या में उपस्थित ग्रामीणों ने ढोल-तांशें के साथ स्वागत किया। विधायक को फूल मालाएं पहनाने के लिए ग्रामीणों में होड़ सी नजर आई। समारोह में मौजूद अधिकारियों ने बताया कि उक्त सड़क का निर्माण 3 करोड़ 86 लाख रुपए की लागत से होगा। विधायक पाटीदार ने आयोजित समारोह में कहा कि हमारा प्रयास है कि विधानसभा के गांवों को शहर से जोडने् की राह आसान हो। ग्रामीणजनों की पग.पग डगर.डगर सुगम हो और वह शहर आपको दूर न दिखे। बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए शहर पहुंचने, तबीयत खराब होने पर आधी रात में भी घर से जिला अस्पताल आसानी से पहुंच सके। हमारा प्रयास है कि आपको जनकल्याणकारी योजनाओं के साथ ही मूलभूत सुविधाओं से वंचित न होना पड़े। इस दौरान जनप्रतिनिधि, सरपंच- सचिव सहित ग्रामीणजन मौजूद रहे।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी डी.पी.गोयल द्वारा आर.टी.ओ. ऑफिस के पास, सागर रोड, रायसेन से प्रकाशित तथा श्री बालाजी प्रिन्टर्स, 21-एच, इंडस्ट्रीयल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल- 462023 (म.प्र.) से मुद्रित।: संपादक- डी.पी.गोयल ।मो.9827054436, 9826735596.भोपाल कार्यालय :4240007. फैक्स:0755-4296195 (सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र भोपाल रहेगा।)।